₹ २०

ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

माघ २०७६ फरवरी २०२०

विज्ञान दिवस

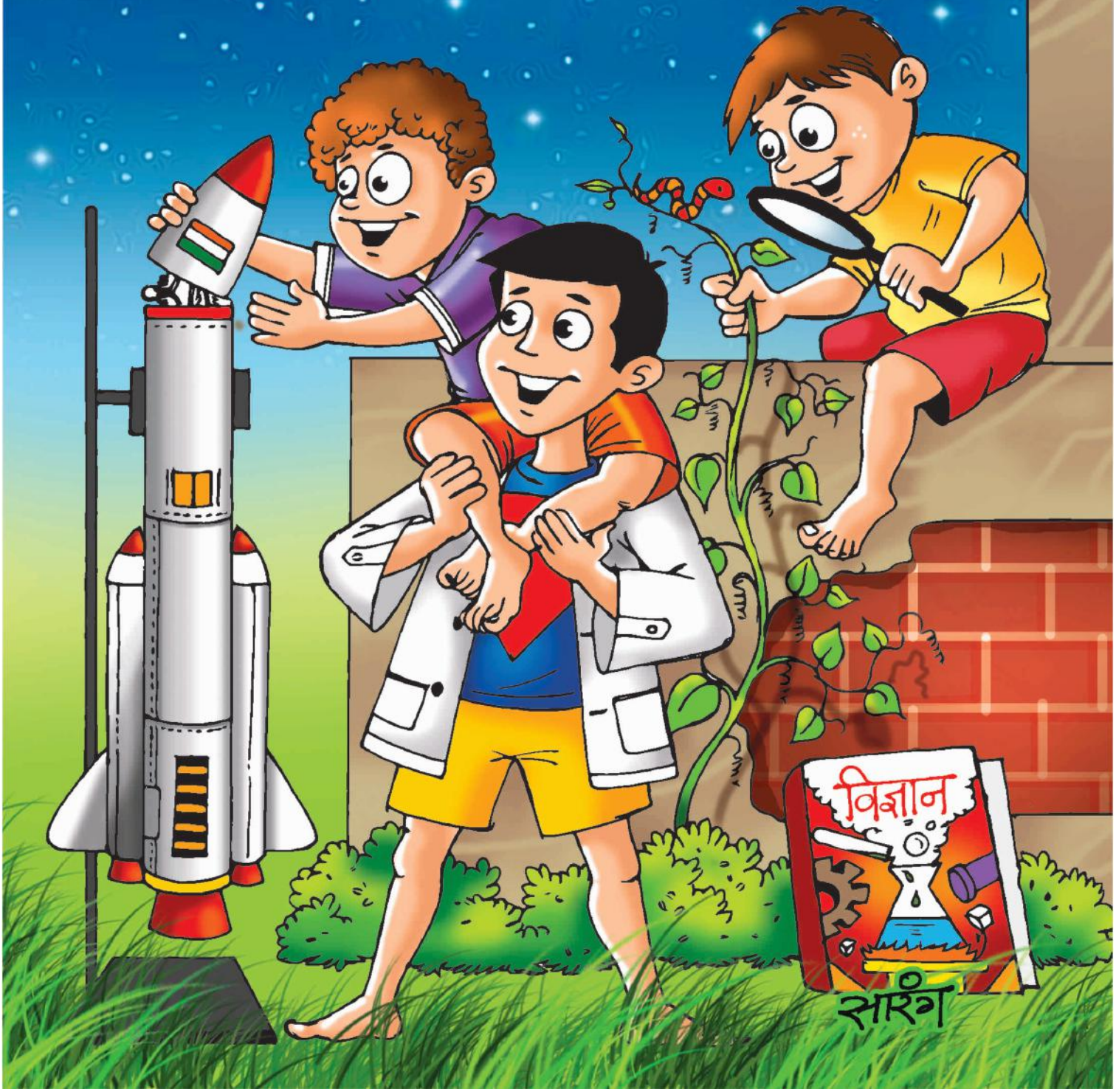

दृष्टि The Vision | drishti

Think IAS Think Drishti

अब घर बैठे कीजिये आई.ए.एस. की तैयारी क्योंकि हम आ रहे हैं आपके घर

हिंदी साहित्य : पेन ड्राइव कोर्स
(Hindi Literature : Pendrive Course)

प्रिय विद्यार्थियों,

1 नवंबर, 2019 को हमने अपना पहला पेन ड्राइव कोर्स शुरू किया था जो आईएएस प्रिलिम्स परीक्षा के लिये था। जिस दिन वह कोर्स शुरू होने की घोषणा हुई, उसी दिन से लगातार हमें ऐसे संदेश मिलने लगे कि बहुत से विद्यार्थी विकास सर से हिंदी साहित्य पढ़ना चाहते हैं किंतु वे कक्षाएँ करने के लिये दिल्ली या प्रयागराज नहीं आ सकते। उन सभी का निवेदन था कि हमें हिंदी साहित्य के लिये भी ऑनलाइन या पेन ड्राइव कोर्स का विकल्प उपलब्ध करवाना चाहिये।

इन निवेदनों को देखते हुए, लगभग दो महीनों तक तकनीकी पक्षों पर कार्य करने के बाद, अब हम हिंदी साहित्य के पेन ड्राइव कोर्स की शुरुआत कर रहे हैं। इस कोर्स में विकास सर द्वारा ली गई कक्षाओं की ही रिकॉर्डिंग (सर्वश्रेष्ठ गुणवत्ता में) उपलब्ध कराई जा रही है। हमारा दावा है कि इस कोर्स की कक्षाएँ गंभीरता से करने के बाद किसी विद्यार्थी के लिये हिंदी साहित्य में अच्छे अंक लाना मुश्किल नहीं होगा।

हमें पूरा विश्वास है कि यह कोर्स उस अंतराल को भरने में सफल होगा जो दिल्ली में रहकर तैयारी करने वाले और दिल्ली नहीं आ पाने वाले विद्यार्थियों के बीच बना रहता है। निकट भविष्य में हम आईएएस और पीसीएस परीक्षाओं के लिये कई नए पेन ड्राइव कोर्स शुरू करेंगे।

एडमिशन 8 जनवरी से प्रारंभ

पहले 200 विद्यार्थियों को 10% की छूट

मोड : पेन ड्राइव

कक्षाओं की गुणवत्ता को परखने के लिये डेमो वीडियोज़ हमारे यूट्यूब चैनल **Drishti IAS** की प्लेलिस्ट **Online Courses** में देखें
(डेमो वीडियोज़ 6 जनवरी से उपलब्ध)

ऑनलाइन कोर्स से जुड़ी हर जानकारी के लिये हमारी वेबसाइट **www.drishtiias.com** पर **FAQs** पेज देखें

हिंदी साहित्य : पेन ड्राइव कोर्स

1. **UPSC** के पाठ्यक्रम के लिए 400+ घंटे की कक्षाएँ।
2. **UPPCS** एवं **BPSC** के विशिष्ट टॉपिक्स के लिये 30-30 घंटे की पृथक कक्षाएँ।
3. प्रत्येक कक्षा को 3 बार देखने की सुविधा, ताकि आप टॉपिक को पढ़ने के बाद रिवीज़न भी कर सकें।
4. हर क्लास में उस टॉपिक से **IAS, PCS** में पूछे गए और अन्य संभावित प्रश्नों का विस्तृत अभ्यास।
5. स्टेट-ऑफ-द-आर्ट कैमरा और साउंड क्वालिटी, जो क्लास के अनुभव को एकदम वास्तविक जैसा बनाती है।
6. पाठ्यक्रम की टेक्स्ट बुक्स व नोट्स भी इस कार्यक्रम में शामिल, जिनके अलावा किसी अन्य अध्ययन सामग्री की आवश्यकता नहीं।

जानकारी के लिये कॉल करें- 9319290700, 9319290701, 9319290702 या सिर्फ मिस्ड कॉल करें- 8010600300

यूपीएससी डीएलपी | उत्तर प्रदेश डीएलपी | बिहार डीएलपी | मध्य प्रदेश डीएलपी | राजस्थान डीएलपी | उत्तराखंड डीएलपी | छत्तीसगढ़ डीएलपी | झारखंड डीएलपी

दिल्ली शाखा का पता : 641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-09
प्रयागराज शाखा का पता : ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइंस, प्रयागराज
Ph.: 8448485517, 8448485519, 87501 87501, 011-47532596

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

माघ २०७६ ▪ वर्ष ४०
फरवरी २०२० ▪ अंक ७

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९, ४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो,

विज्ञान विषय को हम जब केवल सूत्र याद करने और परिभाषाएँ रटने तक सीमित कर लेते हैं तो सच मानिए विज्ञान की आत्मा बहुत रोती है। वास्तव में विज्ञान हर क्षण एक नई सोच एक नवीन विचार की माँग रखता है। वो यदि हमने दिया तो आधुनिक युग में भी चमत्कार होते हैं।

ये किस्सा है अपने मध्य प्रदेश के छतरपुर का। बस स्टैण्ड के पास कृष्ण कॉलोनी का होनहार बालक आदित्य शिवहरे हर समय विज्ञान के कुछ नए प्रोजेक्ट बनाने में व्यस्त रहता था। नए विचारों और नई सोच ने उस बालक से एक ऐसा आविष्कार करवा लिया जिसकी चर्चा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी तक जा पहुँची। प्रधानमंत्री कार्यालय से कुछ अधिकारी छतरपुर के जिलाधीश के साथ आदित्य से आकर मिले। उन्हें यह जानकर घोर आश्चर्य हुआ कि मात्र १६ वर्ष के ११ वीं कक्षा के विद्यार्थी आदित्य ने एक ऐसा आविष्कार किया जिससे बिजली को बगैर तारों का उपयोग किए मोबाईल तरंगों की तरह एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाया जा सकता है। इस व्यवस्था में बिना तार के रिसीवर से केच की गई बिजली झटका (शॉक) भी नहीं देती। वैज्ञानिक इस बच्चे को 'न्यूटन का अवतार' कहकर प्रोत्साहित कर रहे हैं।

माताजी विमला देवी बताती हैं कि जब सब बच्चे खेल रहे होते थे तब आदित्य प्रतिदिन ५-६ घण्टे छत पर बनी अपनी लेब में तारों और मशीनों से उलझे रहता था। आदित्य को यह सफलता एक बार में नहीं प्राप्त हुई है पूरे १५०० बार असफल रहने के बाद प्राप्त हुई यह सफलता आदित्य के आत्म विश्वास को और बढ़ा रही है। भैया कहता है- ''अब अखबारों में करंट से मृत्यु होने के समाचार न मिलें तो मैं समझूंगा मेरा श्रम सफल हो गया।

मानवता की सेवा के इस भाव को प्रणाम। आओ बच्चो! हम सब भी विज्ञान मेलों, विज्ञान प्रदर्श (मॉडल) की प्रतियोगिताओं में जाते समय इसी भाव को मन में धारण कर अपने प्रोजेक्ट बनाएँ तो निश्चय ही हमारा जीवन भी देश और समाज के काम आ सकेगा।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

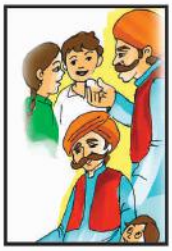

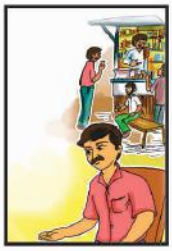

अनुक्रमणिका

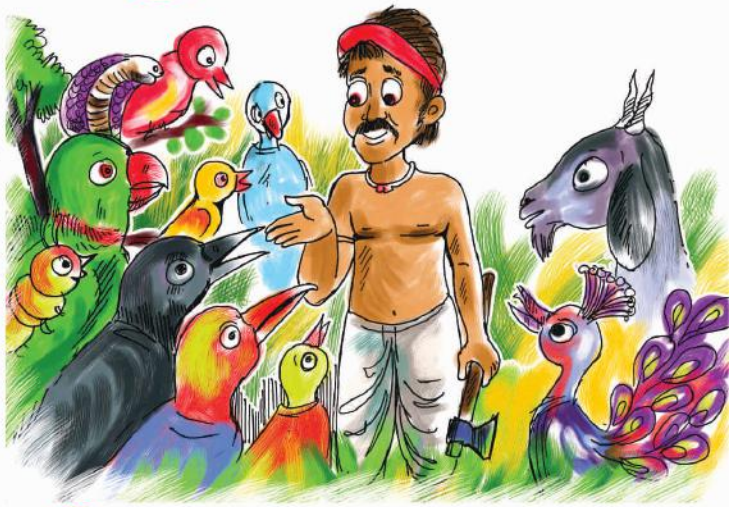

कहानी

- नया जीवन - भगवती प्रसाद द्विवेदी ०५
- सीख लकड़हारे की - सुधा तेलंग ०८
- ग्लोबोफोबिया - शिखरचंद जैन १३
- आ गई समझ - हरीश कुमार 'अमित' १५
- श्रीदेव सुमन - सुरेन्द्र 'अंचल' २६
- आँखें खुल गयीं - डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल ३८
- प्रकृति के पक्ष में - मोनिका जैन 'पंछी' ३२

प्रसंग

- भौंरों की सीख - सत्यनारायण भटनागर ०७
- पानी रे पानी तेरा... - गोपाल माहेश्वरी १८
- माँ ने बनाया महान - डॉ. राकेश 'चक्र' २९

संवाद

- बाँस की आत्मकथा - रामगोपाल 'राही' २२

कविता

- सबने पाया भोजन - पद्मा चौगाँवकर १०
- अम्मा जब खा लेगी... - डॉ. अनिल 'सवेरा' ११
- गर्म मूँगफली - लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव ३४
- महंगी पड़ी मनमानी - भूपिन्दर सिंह आशट ३७
- सूरज दादा - पं. नन्दकिशोर 'निर्झर ५०

बाल प्रस्तुति

- आओ चिड़िया - पायल धनगर २८
- जंगल में महाशिवरात्री - किसलय हर्ष ४०

चित्रकथा

- गुब्बारे का रहस्य - देवांशु वत्स १२
- गृहकार्य की समस्या - देवांशु वत्स ३३
- धैर्य - संकेत गोस्वामी ४८

स्तंभ

- संस्कृति प्रश्नमाला - ११
- गाथा वीर शिवाजी की (३६) - २०
- सचित्र विज्ञान वार्ता - संकेत गोस्वामी २४
- विषय एक कल्पना अनेक -डॉ. शरद नारायण खरे ३०
  - अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे' ३०
  - वीरेन्द्र जैन ३१
- बड़े लोगों के हास्य प्रसंग - नितेश नागोता ३२
- आपकी पाती - ३४
- देश विशेष - श्रीधर बर्वे ३५
- स्वयं बने वैज्ञानिक - राजीव तांबे/सुरेश कुलकर्णी ४४
- यह देश है वीर जवानों का - ४५
- पुस्तक परिचय - ४६
- हमारे राज्य वृक्ष - डॉ. परशुराम शुक्ल ४७

छः अंगुल मुस्कान - विष्णुप्रसाद चौहान ४९

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

नया जीवन

कहानी

भगवती प्रसाद द्विवेदी

विजय बाबू चाय की दुकान में आराम से बैठ चाय की चुस्की ले रहे थे। कार्यालय से छूटने के बाद भी आज मन कुछ उखड़–उखड़ा सा था। इसीलिए वह घर जाते समय सीधे अपनी प्रिय चाय की दुकान में घुस गए थे।

चाय पीकर जब विजय बाबू ने दुकानदार को पैसे दिए, तभी उनकी सृष्टि पास खड़े एक लड़के पर पड़ी। दुकानदार उसे डांटते हुए कह रहा था, ''हमने तुम्हारा ठेका ले रखा है क्या ? चलो, जल्दी खिसको यहाँ से।''

''दो दिनों से मैं बिलकुल भूखा हूँ। मुझे अपनी दुकान में ही रख लेते तो बड़ी कृपा होती। मैं कप–प्लेट धोता रहता। मुझ पर दया कीजिए, साहब!'' लड़के ने गिड़गिड़ाते हुए कहा।

विजय बाबू ने लड़के की ओर पुनः एक बार गौर से देखा। चौदह–पंद्रह साल की उम्र। गेहुंआ रंग, बड़ी–बड़ी आँखें। दुबली–पतली काया। वह अब भी हाथ जोड़कर विनय कर रहा था। पर दुकानदार उसे चोर उच्चका समझकर बात–बात में झिड़क देता था।

विजय बाबू की आँखों में अनायास अपना बचपन घूम गया। माँ–बाप के दिवंगत हो जाने के बाद उन्हें भी बहुत ठोकरें खानी पड़ी थीं। उन्होनें दुकानदार की ओर मुँह कर के लकड़े के प्रति सहानुभूति जताई, ''बेचारे को रख लीजिए न, सिंह साहब। सफाई–वफाई का काम करता रहेगा।''

''आप समझते नहीं है, विजय बाबू।'' दुकानदार ने उन्हें समझाते हुए कहा, ''ऐसे लड़कों का क्या भरोसा! आज रखिए, कल अर्तन–बर्तन लेकर नौ–दो–ग्यारह।''

''मैं चोर उचक्का नहीं हूँ, साहब।'' लड़के ने सफाई पेश की।

''अच्छा आओ इधर।'' विजय बाबू उसे बुलाते हुए दुकान से बाहर निकल गए। लड़का भी यंत्रवत उनके पीछे–पीछे हो लिया।

एक होटक में घुसकर विजय बाबू ने दो प्लेट नाश्ता मंगवाया और एक कुर्सी खींच कर बैठते हुए उसे भी सामने की कुर्सी पर बैठने का संकेत किया। लड़का डरा–डरा सा बैठ गया।

विजय बाबू ने स्नेह में लड़के को अपनेपन की झलक मिली और उसने सब कुछ स्पष्ट बता दिया।

उसका नाम सुशील था और वह

अच्छे खासे, खाते–पीते परिवार का लड़का था। कैंसर जैसी लाइलाज बीमारी में उसकी माँ अचानक चल बसी थीं। यहीं से आरम्भ हो गया था उसे प्रताड़ित करने का सिलसिला। नई माँ उसे बेबात पीटती थीं और पिताजी भी उससे नाराज रहने लगे थे। पढ़ाई लिखाई से उसका मन उचटने लगा और एक दिन एक लड़के की संगति में पड़कर वह माता–पिता के दुर्व्यवहार से ऊब कर, यहाँ भाग आया। उसके साथी को तो एक होटल में कुछ काम धाम मिल गया था, मगर सुशील अब भी भटक रहा था। सारी बातें बता कर सुशील फफक–फफक कर रो पड़ा।

''रोते क्यों हो, बेटे? मैं जो हूँ। चलो, घर चलते हैं। वहाँ तुम्हारे साथ खेलने के लिए तुम्हारी दो छोटी बहनें भी हैं। चलो, उठो।'' विजय बाबू ने सुशील की पीठ थपथपाई और उसे साथ लेकर घर की ओर बढ़ने लगे।

सुशील को अब माँ–बाप तथा छोटी बहनों का प्यार मिलने लगा। पहने तो विजय बाबू की पत्नी, रेखा ने कुछ असहमति प्रकट की थी, पर उनके समझाने–बुझाने पर वे चुप हो गईं थीं। विजय बाबू ने एक विद्यालय में सुशील का नाम भी लिखा दिया। अब वह नियमित पढ़ने जाने लगा। सुबह–शाम विजय बाबू भी बच्चों को नियमित बैठकर पढ़ाया करते थे। सुशील अब उस घर में यूं हिल–मिल गया जैसे वह विजय बाबू का ही सगा बेटा हो। वह अपने माँ–बाप को भूल चुका था। विजय ने तो निर्णय ही कर लिया था कि वह उसके जीवन को नरक नहीं बनने देंगे। उन्होंने एक दिन बहला–फुसलाकर सुशील के घर का पता मालूम कर लिया था। फिर चुपके से एक पत्र भी भेज दिया था। एक सप्ताह के अंदर ही सुशील के माता–पिता आ धमके थे। सुशील को देखते ही उनकी आँखें भर आई थी।

मगर जब माता–पिता के लाख समझाने–बुझाने के बाद भी सुशील वहाँ से अपने घर जाने के लिए तैयार नहीं हुआ तो विजय बाबू ने मुस्कुराते हुए कहा,''देख लिया न आपने, राजीव बाबू? इसलिए मैंने आपको चिट्ठी लिखी थी ताकि स्वयं ही यहाँ आकर अपनी आँखों से देख लें। बच्चे स्वादिष्ट व्यंजनों के भूखे नहीं होते, भाई! वे तो प्यार और ममता के भूखे होते हैं। एक माह में ही मेरे घर का यह स्नेह भरा वातावरण सुशील को ऐसा भा गया कि अब अपने माँ–बाप के पास भी जाने को तैयार नहीं। जरा आप ही सोचिए, इसका कारण क्या हो सकता है?''

''विजय बाबू!'' राजीव बाबू ने हाथ जोड़ते हुए कहा, ''मुझे अब और लज्जित न करें। हम पति–पत्नी अपनी गलती के कारण बहुत लज्जित हैं। मगर आज के बाद हम आपको शिकायत का अवसर कभी नहीं देंगे। हम आपके आभारी हैं कि आपने मेरे बेटे का जीवन नरक बनने से बचा लिया, वरना यह इस शहर में कहीं जूठी प्लेटें धोते हुए जीवन काटता और वहाँ हम लोगों को कुछ पता ही नहीं चलता।''

''नहीं साहब यह तो मेरा कर्तव्य था।'' विजय बाबू के हाथ अपने आप जुड़ गए।

''सुशील बेटे! मेरे अच्छे बेटे!'' माँ ने उसे गले से लगा लिया।

''सुशील! अच्छे लड़के माँ–बाप की डांट फटकार की चिंता नहीं करते। ऐसा कुछ करते ही नहीं कि डांट सुनने का मौका मिले। अपनी गलती को सहर्ष स्वीकार कर लेने में ही बड़प्पन है। वरना जीवन से भागना भी क्या जीवन है।'' जीवन बाबू ने सुशील की ओर देखते हुए कहा।

''मामाजी! आपने मेरी आँखें खोल दीं। सचमुच मैं भटक गया था।'' सुशील, विजय बाबू के पैरों तक झुक गया।

''विजय बाबू!'' राजीव ने कहा, ''सचमुच आपने सुशील को एक नया जीवन दिया है। मेरे योग्य कोई सेवा हो तो अवश्य बताइए।''

''हाँ बन्धु, मेरी बस एक मांग है आपसे...और वह यह कि सुशील को फिर से माता पिता का सच्चा स्नेह मिले।'' कहते हुए विजय बाबू की आँखों में हर्ष–मिश्रत आंसू टपक पड़े।

● **मीठापुर (बिहार)**

।। प्रसंग ।।

भौंरो की एक सीख

प्रसंग

सत्यनारायण भटनागर

हमारा सौभाग्य है कि हमारे देश के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम विश्व के एक सम्मानित वैज्ञानिक भी हैं। उनका बच्चों व युवाओं के प्रति विशेष लगाव है। वे प्रत्येक प्राप्त अवसर पर बच्चों व युवाओं से संवाद करना नहीं भूलते। इस संवाद में वे कुछ प्रेरक जानकारी भी दे ही देते हैं। बारहवीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस गुवाहटी में हुई थी। उसमें उन्होंने जो उद्‌बोधन दिया उसमें जो प्रेरक तत्व हैं उन्हें देखें–

उन्होंने कहा– ''वायुगति की नियमों के अनुसार भौंरे को नहीं उड़ पाना चाहिए। उसके पंखों के पूरे आकार के संबंध में उनके शरीर के आकार, भार और बनावट को देखते हुए उड़ना वैज्ञानिक दृष्टि से असंभव है। भौंरा वैज्ञानिक सिद्धांत से अज्ञान रहते हुए अपने पंखों को फड़फड़ाता है। इस उच्च आवृति के दोलन में एक भँवर पैदा होती है जो इसे उड़ने में सहायता करती है। दृढ़ निश्चय से आप स्थापित मान्यताओं के विरुद्ध हमेशा सफलता प्राप्त कर सकते हैं, भौंरे से कुछ सीखिए।''

राष्ट्रपति जी ने थिरूक्कुरूल के कवि सनत थिरूवल्लूवर द्वारा २२०० वर्ष पूर्व लिखित कविता की पंक्तियों की याद दिलाई। कविता का अर्थ है कि नदी अथवा झील अथवा तालाब की गहराई चाहे जितनी भी हो, पानी की दशा चाहे जैसी भी हो कुमुदिनी का फूल हमेशा खिलता है और अपनी छटा बिखेरता है। इसी तरह यदि किसी लक्ष्य को प्राप्त करने की दृढ़ इच्छा है तो समस्या चाहे जितनी विशाल क्यों न हो सफलता अवश्य मिलेगी। इस अवसर पर पूर्व राष्ट्रपति जी की दस सूत्री शपथ –

- मैं लगन के साथ अपनी पढाई करूँगा और उसमें सर्वोच्च सफलता प्राप्त करूँगा।
- मैं कम से कम दस ऐसे लोगों को पढ़ना–लिखना सिखाऊँगा, जो अभी ऐसा नहीं कर सकते।
- मैं कम से कम १० पौधे लगाऊँगा और लगातार उनकी देखभाल करके उनकी वृद्धि सुनिश्चित करूँगा।
- मैं ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों का भ्रमण करूँगा और कम से कम पाँच लोगों को नशाखोरी और जुआ खेलने से स्थायी रूप से छुटकारा दिलाऊँगा।
- मैं कष्ट झेल रहे बंधुओं की पीड़ा को दूर करने का लगातार प्रयास करूँगा।
- मैं किसी जातीय अथवा भाषायी भेदभाव को कभी समर्थन नहीं दूंगा।
- मैं ईमानदार रहूँगा और दूसरों के लिए उदाहरण प्रस्तुत करूँगा।
- मैं प्रबुद्ध नागरिक बनने के लिए कार्य करूँगा।
- मैं सदैव मानसिक और शारीरिक रूप से दिव्यांग लोगों का मित्र रहूँगा और उन्हें हम सबकी तरह सामान्य अनुभव कर पाने की दिशा में कठोर प्रयास करूँगा।
- मैं अपने देश और लोगों की सफलता सदैव सगर्व मनाऊँगा।

● रतलाम (म.प्र.)

कहानी

सीख लकड़हारे की

सुधा तैलंग

किसी गाँव में एक प्राचीन विशाल बरगद का पेड़ था। वहाँ बहुत से पशु पक्षी रहते थे। कौआ, तोता, चील, कबूतर, कोयल, बाज, तीतर, मैना, गिद्ध व मोर आदि पक्षियों के अतिरिक्त बरगद की छाया में बकरी, गाय, बैल, भैंस, भेड़ अनेक पशु पक्षी भी विश्राम करते। राह चलते पथिक सूरज की धूप से बचने के लिए ठंडी छाया में बैठकर भोजन करते। कुछ देर आराम करते और चल देते। बरगद की कोटर में नीचे एक सांप का परिवार भी रहता। पेड़ की शाखाओं में घोंसला बनाकर रहने वाले पक्षी प्रातः उठते ही भोजन की खोज में निकल पड़ते। शाम को अपने बसेरे में लौटकर अपने नन्हें मुन्नों को अपनी चोंच से दाना खिलाते। सभी पशु पक्षियों में बहुत अपनत्व व एकता थी।

बरगद के पेड़ पर एक कालिया नाम का कौआ भी रहता था। वह बहुत ईर्ष्यालु स्वभाव का था। वह पूरे पेड़ पर अपना अधिकार जतलाता। कभी इस डाल पर तो कभी उस डाल पर वो उछल कूद करता। सबको परेशान करता। कौआ बहुत चालाक था। वो सोचता था कि ये पेड़ उसके पुरखों की धरोहर है। यदि पूरे पेड़ पर ही मेरा अधिकार हो जाए तो कितना अच्छा हो। इसके बाद तो वह अपने घर बरगद दादा को बहुत अच्छे से सजा संवार भी सकता है।

एक दिन सुबह होते ही कालिया ने चिल्लाना शुरु कर दिया। कौवे की काँव काँव की तेज आवाज सुनते ही आसपास के पूरे पशु पक्षी भी इकट्ठे हो गए।

ये देखकर कालिया ने चिल्लाते हुए कहा, ''सुनो सुनो। मेरे प्यारे भाई और बहिनों। तुम सबको तो पता ही है कि इस बरगद के पेड़ पर मेरा ही अधिकार है। मेरे दादा नाना का परिवार लम्बे समय से यहाँ रहते आये हैं। ऐसे में मैं अकेला ही यहाँ रहूँगा। तुम सबको ये पेड़ छोड़कर किसी दूसरे पेड़ में अपना घर बनाना होगा।''

यह सुनते ही सभी पशु पक्षी भी पेड़ पर अपना अधिकार बताने के लिए आगे आ गये। कुछ ही देर में पेड़ की कोटर से बाहर निकल कर सांप ने फुफकारते हुए कहा, ''अरे ओ कालिया। बड़ा आया इस पेड़ पर अपना अधिकार जमाने वाला। पेड़ के ऊपर तुम रहते हो तो क्या हुआ इस के नीचे तो हमारा ही अधिकार है। तुम्हें तो पता है कि मेरे पूर्वज भी यहाँ पर लम्बे समय से रहते आये हैं। मैं तो बाप दादा के समय से यहीं रहा हूँ इसलिए ये वृक्ष मेरा ही है।''

तभी एक कीड़ा उड़ते हुए आया और बोलने लगा... ''मैं छोटा हूँ तो क्या हुआ, मैं भी अपने बच्चों के साथ वर्षों से यहीं रह रहा हूँ।''

हीरामन तोता भी भला कैसे पीछे रहता? सीता राम सीता राम कहते हुए वह भी अपनी राम कहानी सुनाने लगा। ये सुनते ही गिद्ध, चील, मोर, तीतर, मैना, तोता, चिड़िया के साथ साथ गाय, बैल, भेड़ व खरगोश आदि सब पशु पक्षी भी पेड़ पर अपना अधिकार बताने लगे। इससे पूरे चंपक वन में शोर गुल सुनकर एक कबूतरी ने अपने पंख फड़फड़ाते हुए गुटूर गूं की आवाज करते हुए

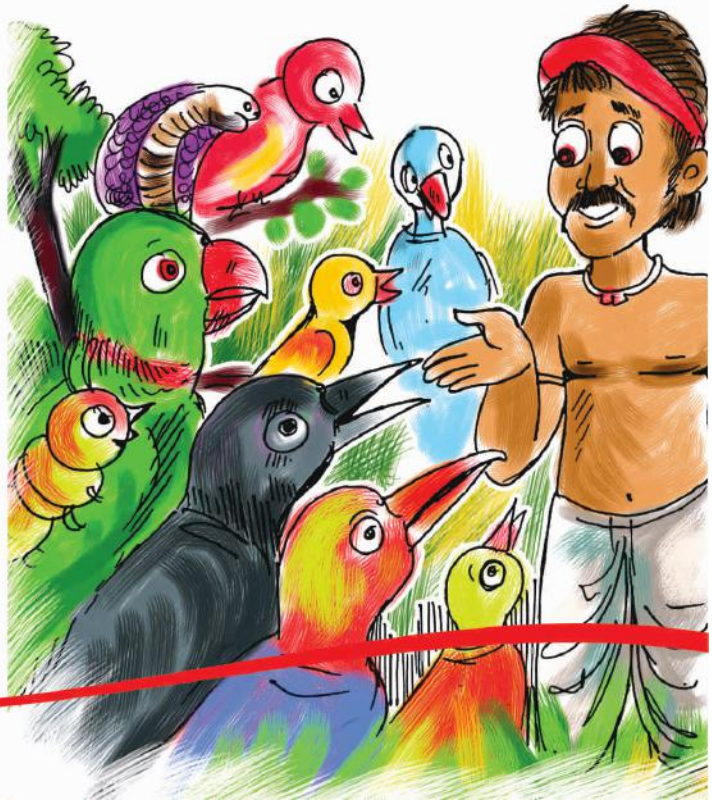

कहा– ''अरे! तुम लोग आपस में क्यों लड़ झगड़ रहे हो? मेरे तो अभी छोटे बच्चे हैं उन्होंने तो उड़ना भी नहीं सीखा है। ये पेड़ हम सभी का है। मुझे तो कहीं भी थोड़ा सा स्थान ही मिल जाएगा मैं अपने बच्चों के साथ वहीं रह जाऊँगी।''

ये सुनते ही कालिया चिल्ला पड़ा, ''कबूतरी काकी! बड़ी आई सीख देने वाली। तुम्हारे बच्चों को तो मैं चोंच से कहीं दूसरे पेड़ में रख आऊँगा।''

सभी पशु पक्षियों के आपस के झगड़े से प्रसन्न होकर एक ओर तो मोर पंख फैलाकर नाचने लगा। वहीं गौरेया के दो बच्चे उछल कूद करने लगे। ये देख कर कालिया कौआ को क्रोध आ गया। उसने गौरेया के बच्चों को चोंच में उठाया और घोंसले में रख आया।

तभी पेड़ के नीचे बहुत देर से आँखें बन्द कर ध्यान की मुद्रा में खड़े बकरे ने जोर से मिमियाते हुए कहा, ''देखो। तुम सभी आपस में इस तरह लड़ते झगड़ते रहोगे तो कुछ भी नहीं होगा। मैंने तुम सबकी समस्या सुन ली है। ऐसा करते हैं पास ही के गाँव में मेरा एक मित्र रहता है। वह लकड़हारा है। हम सब उसके पास चलते हैं। वो ही हमारा झगड़ा निपटा सकता है। मैं तुम सबको अपनी आवश्यकता व अधिकार अनुसार कोई शाखा कौवों को तो कुछ दूसरे पक्षियों को तो जड़ कालिया सांप दादा को और तना कीड़े मकोड़ों को बराबर हिस्सा कर के दिलवा दूँगा। चिन्ता मत करो। मेरा मित्र कुल्हाड़ी से पेड़ को टुकड़ों में काट करके सबके साथ पूरा न्याय करेगा।''

सबको बकरे का निर्णय व सुझाव पसंद आया। सभी पशु पक्षी एक साथ मिलजुल कर लकड़हारे के घर की ओर चल पड़े। आगे आगे बकरा पीछे पीछे दूसरे पशु पक्षी। लकड़हारा घर के बाहर लगे पेड़ पौधों में पानी डाल रहा था। जैसे ही उसने बकरे के साथ पशु–पक्षियों की सेना देखी तो वो चौंक गया। उसने बकरे से कहा, ''क्यों भाई? सब कुछ ठीक तो है। क्या बात है?''

बकरे ने लकड़हारे को पूरी बात बताई। सबकी समस्या बताई।

ये सुनते ही लकड़हारा बोला, '' चंपक वन में रहने वाले मेरे प्यारे साथियो! मैनें तुम सबकी समस्या सुन ली है, समझ ली है। देखो मैं पहले पेड़ पौधे काटता था। पर अब मैंने लकड़हारे का काम छोड़ कर खेती–बाड़ी करना शुरु कर दिया है। तुम सबको तो पता ही होगा आजकल जंगल कम होते जा रहे हैं। पेड़ कट रहे हैं। गाँव नगरों में परिवर्तित हो रहे हैं। आने वाले समय में न ये जंगल रहेंगे न पेड़ पौधे।''

''अरे लकड़हारे काका! हम तुम्हारा यहाँ प्रवचन सुनने नहीं आये हैं। हमें जंगल से क्या करना है मुझे तो मेरे पेड़ से मतलब है।'' कौए ने चिल्लाते हुए कहा।

''अरे कालिया। पहले पूरी बात तो सुन लो। अच्छा ठीक है मैं कुल्हाड़ी लेकर चलता हूँ। तुम्हारी डाल सांप का तना कीड़ों के पत्ते अलग काट कर पूरे पेड़ को ही काट देता हूँ। जब पेड़ ही टुकड़े होकर कट जाएगा तो जमीन पर पड़ी डालियों पर अपना बसेरा बनाओगे?''

कुछ देर सन्नाटा छा गया। सबने सोचा कि बात तो ये सच ही कह रहे हैं। सब एक सुर में बोले, ''हाँ काका! आपकी बात में दम तो है। तो फिर क्या करें हम? आप ही बतायें।''

''आज सब जगह गाँव व शहरों में प्रदूषण फैल रहा है। सांस लेने में तकलीफ हो रही है। चारों ओर विषैली हवा फैल रही है। वर्षा की कमी से धरती बंजर होती जा रही है। यदि तुम लोगों को अपना चंपक वन, अपना घर बरगद दादा को बचाना है तो सबसे पहले लड़ाई झगड़े को छोड़ना होगा। ऐसे में मेरा आप सबसे यही कहना है कि आपसी ईर्ष्या, बैर की भावना को छोड़कर आप

सबको मिलजुलकर रहना चाहिए। क्योंकि एकता में ही शक्ति है।

आप सब अपने कर्तव्य को भूलकर अपने अपने अधिकार के लिए लड़ झगड़ रहे हैं, हल्ला कर रहे हैं। देखो ये पेड़ पौधे प्रकृति का वरदान हैं। अनमोल उपहार है। वह भला किसी एक की सम्पति कैसे हो सकता है ?

हम सबको चाहिए कि मिलजुल कर पेड़ पौधों की रक्षा करें। उनको काटे नहीं बल्कि लगे रहने दें। कोई भी मनुष्य यदि तुम्हें पेड़ काटता हुआ मिल जाये तो उसे पेड़ मत काटने देना। क्योंकि पेड़ ही हमारे जीवन रक्षक अन्न दाता हैं। पेड़ नहीं रहेंगें तो हमारा जीवन व अस्तित्व भी समाप्त हो जाएगा।''

लकड़हारे की बातें सुनकर सभी पशु पक्षियों को अपनी भूल का ज्ञान होने के साथ सीख भी मिल गई। उन्होंने लकड़हारे से माफी मांगी और प्रकृति को बचाने पेड़ व वनों की रक्षा करने के साथ-साथ मिल जुलकर रहने का वचन दिया। बकरे ने अपने मित्र लकड़हारे को धन्यवाद दिया और अपने साथियों के साथ उछलते कूदते हुए अपने बरगद के पेड़ की ओर चल पड़ा। आगे आगे मोर अपने पंख फैलाकर नाच रहा था और बकरे की पीठ पर बैठा हीरामन तोता अपनी मधुर आवाज में गीत गा रहा था।

आओ हम सब मिलजुल कर
पेड़ों की करें सुरक्षा।
पेड़ ही हैं हमारे जीवन का आधार।
पेड़ है प्रकृति का उपहार।।

● बीकानेर (राज.)

कविता

पद्मा चौगाँवकर

सबने पाया भोजन

जब किसान ने
मेहनत करके,
बीज खेत में
बिखराया।
सूरज ने कुछ
गर्म धूप दी,
बादल ने
पानी बरसाया।
मिट्टी का जो
साथ मिला तो,
बीजों में
अंकुर आया।

नन्हा अंकुर
पौधा बनकर
खड़ा खेत में
लहराया।
पौधों में फिर
बाली निकली,
तब किसान मन
हर्षाया।

बाली से निकला
अनाज जो
पिसकर घर में आया।
तब बन पायी,
दाल-चपाती।
हमने-तुमने
भोजन पाया।

● गंजबासौदा (म.प्र.)

अम्मा जब खा लेगी खाना

कविता

डॉ. अनिल 'सवेरा'

अम्मा जब खा लेगी खाना,
फिर मैं खाना खाऊँगा।
नन्हें-मुन्ने हाथों से मैं,
खुद ही खूब खिलाऊँगा।

अम्मा भी तो खुद हाथों से,
मुझको खूब खिलाती है।
मीठी-मीठी थपकी देकर,
अपने संग सुलाती है।

शाला का भी काम बैठकर,
माँ करवाती है पूरा।
कोई काम कभी भी मेरा,
रहता नहीं है अधूरा।

● जगाधारी (हरियाणा)

संस्कृति प्रश्नमाला

- भरत और शत्रुघ्न जब नाना के कैकय राज्य से अयोध्या पहुँचे तो उन्होंने पिता महाराज दशरथ को किस स्थिति में पाया?
- महारथी वीर अभिमन्यु की माता और मामा कौन थे?
- शिवजी के वाहन नन्दी की एक विशाल प्रतिमा पर्सिपोलिस नगर में स्थित है, यह नगर किस देश में है?
- शिवपुराण के अनुसार भीमशंकर ज्योतिर्लिंग महाराष्ट्र में स्थित है। महाराष्ट्र के किस स्थान पर यह पवित्र ज्योतिर्लिंग है?
- किस प्रतापी सम्राट के कारण इस धरती का नाम पृथ्वी पड़ा?
- हिन्दवी स्वराज्य की स्थापना करने वाले कौन थे?
- महर्षि भारद्वाज के वैमानिक शास्त्र में विमान उड़ाने वाले पायलट को क्या नाम दिया गया है?
- प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दो महानायकों रंगोबापू जी तथा अजीमुल्ला खान की प्रथम भेंट कहाँ हुई?
- मेवाड़ के महाराणा रतनसिंह के सेनापति कौन थे?

(उत्तर इसी अंक में)

(साभार : पाथेय कण)

गुब्बारे का रहस्य

चित्रकथा : देवांशु वत्स

ग्लोबोफोबिया

कहानी

शिखरचंद जैन

आरव आज बड़ा प्रसन्न था। उसके परममित्र सक्षम ने देखा कि आज वह कक्षा में कुछ अधिक ही चहक रहा था। दोनों की कुर्सी दूर-दूर थी इसलिए कारण पूछने के लिए उसे भोजन अवकाश की प्रतीक्षा करनी पड़ी। घंटी बजते ही उत्सुकतावश वह भोजन का डिब्बा लेकर आरव की ओर दौड़ा।

डिब्बा उसकी मेज पर रखते हुए उसने आरव की पीठ पर धौल जमाई और पूछा, ''क्या बात है भाई! आज बहुत प्रसन्न दिख रहा है?''

आरव बोला, ''अरे मित्र, कल मेरा जन्मदिन है और पिताजी ने वचन दिया है कि वह मुझे साइकिल देने वाले हैं। कितना आनंद आएगा ना जब मैं अपनी साइकिल की घंटी बजाता हुआ हवा की तरह मिनटों में शाला पहुँच जाऊँगा। फिर मुझे रोज ४ किलोमीटर पैदल चलकर विद्यालय नहीं आना पड़ेगा।

सक्षम ने कहा, ''वाह मित्र! सचमुच आनंद आ जाएगा। तेरे जन्मदिन का उत्सव मनाने मैं भी आऊँगा। बुलाएगा ना?''

''यह भी कोई कहने वाली बात है। तू तो मेरा सबसे प्रिय मित्र है। तू ही नहीं आएगा तो फिर कौन आएगा?'' आरव ने कहा।

दोनों मित्रों ने दोपहर का भोजन करते हुए खूब बातें की। तब तक विश्राम समाप्ति की घंटी बज गई।

छुट्टी हुई तो सक्षम सोच में डूब गया कि आरव को ऐसा क्या उपहार दे कि वह प्रसन्न हो जाए। तभी उसे याद आया कि आरव को ग्लोब बहुत पसंद है। विद्यालय के सामने पुस्तकों की दुकान पर बिकने वाले छोटे बड़े ग्लोब्स को आरव प्रायः ध्यान से देखता रहता है। उसने कई बार सक्षम से कहा था कि ये ग्लोब बड़े अच्छे लगते हैं ऐसा लगता है कि पूरा संसार अपने सामने ही रखा है। एक संकेत से हम पूरे विश्व को घुमा भी सकते हैं, लेकिन बहुत कहने पर भी माता-पिता मुझे ग्लोब नहीं दिलाते। कहते हैं कि यह बेकार की वस्तु है। सक्षम के मुख पर हंसी तैर गई। उसकी समस्या हल हो गई। उसने अपनी जेब टटोली पैसे अभी कुछ कम थे। सोचा कोई बात नहीं अभी घर से पैसा ला कर खरीद लूँगा।

आरव के जन्मदिन और उपहार के बारे में तरह - तरह की बातें सोचता हुआ सक्षम धीरे-धीरे अपने घर की ओर बढ़ रहा था। तभी उसे याद आया कि आरव भूल से उसकी विज्ञान की कॉपी अपने बस्ते में डाल कर ले गया। जो एक प्रश्न का उत्तर देखने के लिए ली थी। आज जीवन विज्ञान में गृहकार्य भी मिला था। इसलिए कॉपी लेनी आवश्यक थी। यह विचार आते ही उसके पैर आरव के घर की ओर मुड़ गए।

आरव ने अपनी भूल पर खेद प्रकट करते हुए सक्षम की कॉपी लौटा दी।

तभी आरव की माँ आ गयी। उन्होंने कहा, ''अरे बेटा सक्षम! आरव ने तुम्हें बताया कि नहीं? कल उसका जन्मदिन है। तुम्हें अवश्य आना है।'' सक्षम कुछ कहता इससे पहले ही आरव का बड़ा भाई आया और माँ के कान में फुसफुसा कर कुछ कहने लगा।

आरव की माँ ने नाराज होकर कहा, ''बिलकुल नहीं, तुम्हें पता है ना आरव को ग्लोबोफोबिया है। मैं नहीं चाहती कि जन्मदिन के अवसर पर उसे कोई परेशानी हो।'' फिर वे कोई काम याद आने पर तुरंत भीतर चली गयी। सक्षम ने आरव को अभिवादन किया और बाहर आ गया।

सक्षम सोचने लगा, ''फोबिया तो डर को कहते हैं, जिस व्यक्ति को जिस चीज से डर लगता है, उसके नाम पर ही फोबिया का नाम होता है। लेकिन आरव को तो ग्लोब से लगाव है और उसकी माताजी कह रही है कि उसे ग्लोबोफोबिया है। हो सकता है ग्लोब हाथ में लेने पर उसे कोई समस्या हो जाती है, जिसे वह नहीं समझ पा रहा हो। संभवतः इसीलिए उसके माता–पिता ने इतने दिनों से उसे ग्लोब न दिलाया हो।''

सक्षम असमंजस में था। लेकिन उसने तय कर लिया कि अब ग्लोब के बदले में कोई भी दूसरी वस्तु ही देनी है।

अगले दिन सक्षम तैयार होकर आरव के घर पहुँचा। आरव के सगे सम्बंधी व आस पड़ोस के बच्चे भी आए हुए थे। फूलों और दीपकों से घर को सजाया गया था। लेकिन सक्षम ने सजावट में कोई कमी अनुभव की। तभी उसने ध्यान दिया कि पूरे घर में एक भी गुब्बारा नहीं था। जबकि जन्मदिन की सजावट में गुब्बारे तो सबसे प्रमुख वस्तु होती है।

तभी आरव की माँ आई। उन्होंने मुस्कुराकर सक्षम का स्वागत किया और पूछा, ''बेटा देखो तो सजावट में कोई कमी तो नहीं रह गई?''

सक्षम के मुँह से निकल गया– ''काकी जी बाकी सब तो ठीक है मगर गुब्बारा तो एक भी नहीं है। क्या आसपास फुग्गे नहीं मिले?''

आरव की माँ ने कहा– ''ओ हो! मुझे पता था तुम यह बात अवश्य पूछोगे। वास्तव में आरव को ग्लोबोफोबिया की समस्या है इसलिये हमने गुब्बारे नहीं लगवाये।''

''लेकिन काकी जी ग्लोबोफोबिया तो ग्लोब से लगने वाला डर होता है ना?'' सक्षम ने एक ही सांस में पूछ डाला।

आरव की माँ हँसने लगीं, बोली, ''नहीं–नहीं बेटा! ग्लोबोफोबिया गुब्बारों से लगने वाला डर होता है। ग्लोबोफोबिया के नाम से हर कोई धोखा खा जाता है। यहाँ ग्लोब शब्द का प्रयोग वास्तव में गुब्बारे के गोल आकार के लिए किया गया है। गुब्बारों से डरने वाले लोग दो तरह के होते हैं। कुछ लोगों को इसके फटने से जो आवाज आती है उससे डर लगता है जबकि कुछ लोगों को तो गुब्बारा देखते ही घबराहट हो जाती है। इसके पीछे उसके साथ गुब्बारे को लेकर हुआ कोई पुराना कड़वा अनुभव या दुर्घटना भी हो सकती है। आरव को गुब्बारे फटने की आवाज से बहुत डर लगता है। यहाँ तक कि वह इससे अचेत भी हो सकता है। इसलिए मैंने गुब्बारे नहीं सजवाए। तुम्हे सुनकर आश्चर्य होगा कि ओपरा विनफ्रे जैसी प्रसिद्ध हस्ती भी इस फोबिया की शिकार है। एक बार उन्होंने कहा था कि इससे उन्हें ऐसे लगता है जैसे कहीं बन्दूकें चलायी जा रही हों।''

दूसरे बच्चे भी ये बातें सुन रहे थे। उन्हें भी इस नई जानकारी से बड़ा आश्चर्य हुआ।

सक्षम ने कहा, ''काकी मैं तो बुद्धू बन गया । खैर कोई बात नहीं अब अगले जन्मदिन पर आरव को उपहार में ग्लोब ही लाकर दूँगा।''

● **कोलकाता (प.ब.)**

आ गई समझ

कहानी

हरीश कुमार 'अमित'

''पिताजी ले आए न मेरा नया चश्मा।'' शाम को पिताजी जैसे ही घर आए, धैर्य उनसे पूछने लगा।

''हाँ बेटा, ले आया हूँ तभी तो घर पहुँचने में थोड़ी देर हो गई।'' उन्होंने कुर्सी पर बैठते हुए उत्तर दिया।

''तो दीजिए न मेरा नया चश्मा। देखूँ तो सही उसे लगाकर कैसा दिखता है मुझे।'' धैर्य ने अधीरता से कहा।

''दे रहा हूँ भाई! थोड़ी देर रुको तो।'' हल्के से हँसते हुए उन्होंने पास रखा अपना झोला खोला और उसमें से नया चश्मा निकालकर धैर्य को पकड़ा दिया।

धैर्य ने जल्दी से अपना पुराना चश्मा उतारकर मेज पर रखा और नया चश्मा लगा लिया।

तब तक माँ, पिताजी के लिए पानी का गिलास लेकर आ गई थी। धैर्य को नया चश्मा लगाए हुए देखकर वे उससे पूछने लगीं। ''कैसा दिख रहा है बेटू! इससे?''

''साफ दिख रहा है न!'' पानी पीते हुए पिताजी ने भी पूछा।

''बिलकुल साफ दिख रहा है इससे। पुराने चश्मे से तो धुँधला-धुँधला सा दिखता था। मैं अपना नया चश्मा मित्रों को दिखाकर आता हूँ।'' कहते हुए धैर्य घर से बाहर चला गया।

पिछले कुछ दिनों से धैर्य को चश्मे से स्पष्ट नहीं दिख रहा था। इसलिए पिताजी ने उसे आँखों के डॉक्टर को दिखाया था। डॉक्टर ने जाँच करके बताया था कि धैर्य के चश्मे का नम्बर बदल गया है।

वैसे तो धैर्य के पुराने चश्मे के लैंस बदलवाकर ही काम चल सकता था, पर ऐसा करने पर पुराना चश्मा दुकानदार को देना पड़ता और एक-दो दिन तक धैर्य को चश्मे के बिना काफी मुश्किल होती, इसलिए पिताजी ने धैर्य को एक नया चश्मा बनवाकर देने का फैसला किया था। ऐसा करते समय उन के मन में यह बात भी थी कि बाद में कभी आवश्यकता पड़ने पर पुराना चश्मा भी काम में आ सकता है।

और कुछ दिनों बाद पुराने चश्मे की आवश्यकता

आन भी पड़ी। हुआ यह कि एक दिन शाम के समय साइकिल चलाते हुए धैर्य का संतुलन बिगड़ गया और वह साइकिल समेत जमीन पर आ गिरा। उसका चश्मा उछलकर दूर जा पड़ा। धैर्य और उसकी साइकिल को उसके मित्रों ने उठाया। धैर्य का एक मित्र उसका चश्मा भी उठा लाया, मगर चश्मा पहने जाने लायक रह नहीं गया था। गिर जाने के कारण दोनों लैंस चटक गए थे।

धैर्य किसी तरह घर पहुँचा और उसने सारी बात पिताजी को बताई।

धैर्य की बात सुनकर पिताजी कहने लगे, ''इस चश्मे के तो दोनों लैंस बदलवाने पड़ेंगे। एक–दो दिन तो लगते ही हैं न नए लैंस बनने में।''

''मगर पिताजी तब तक मैं चश्मे के बिना कैसे काम चलाऊँगा?'' धैर्य पूछने लगा।

''बेटा, तब तक अपना पुराना चश्मा पहनकर काम चला लो।'' पिताजी ने उत्तर दिया।

''पुराना चश्मा तो पता नहीं कहाँ होगा।'' धैर्य बोला।

''कहाँ होगा? अरे बेटा! अभी पिछले महीने ही तो बनवाया था यह नया चश्मा। तब तुमने अपना पुराना चश्मा जहाँ रखा होगा, वहीं होगा न वह। अभी एक–दो दिन उसे ही पहनकर काम चला लो।'' पिताजी ने कहा।

तभी वहाँ माँ भी आ गई। पिताजी की बात सुनकर वे धैर्य से कहने लगीं, ''चलो मैं भी देखती हूँ कहाँ पड़ा है तुम्हारा पुराना चश्मा।''

इसके बाद माँ धैर्य के साथ उसके कमरे की ओर चली गईं।

कुछ देर बाद धैर्य के पिताजी के पास आया और कहने लगा, ''पिताजी चश्मा तो मिल नहीं रहा।''

''मिल नहीं रहा? बेटा! अभी पिछले महीने ही तो रखा होगा न तुमने कहीं अपने पुराने चश्मे को। ध्यान से ढूँढने पर मिल जाएगा।'' पिताजी अभी यह कह ही रहे थे कि माँ भी वहाँ आ गईं।

''मिल गया क्या?'' पिताजी पूछने लगे माँ से।

''मैंने तो देख लिया अच्छी तरह से। मुझे तो मिला नहीं चश्मा कहीं पर भी।'' माँ ने उत्तर दिया।

''कहाँ चला गया चश्मा?'' पिताजी ने जैसे अपने आप से पूछा।

''पिताजी चश्मे के बिना तो मुझे बड़ा विचित्र सा लग रहा है। कुछ भी साफ दिखाई नहीं दे रहा। सिर भी दुखने लगा है।'' धैर्य ने अपनी समस्या बताई।

''तो बेटा, सँभालकर रखना था न पुराना चश्मा कहीं पर। आज काम आता वह। उससे चाहे पूरी तरह स्पष्ट दिखाई नहीं पाता फिर भी एक–दो दिन तो काम चल ही जाता न। तब तक तुम्हारे नए चश्मे के लैंस भी बदल जाते।'' पिताजी समझाने लगे धैर्य को।''

''पिताजी नए चश्मे को ठीक करवाने के लिए आज ही क्यों नहीं दे देते?'' धैर्य बोला।

''बेटा! आज तो रविवार है । रविवार को तो सारा बाजार बन्द रहता है न। और कल २ अक्टूबर है– गाँधी जयंती, कल भी सारी दुकाने बन्द रहेंगी।'' पिताजी बताने लगे।

''तब तो मंगलवार को ही दिखाया जा सकेगा चश्मा ठीक करवाने के लिए।'' माँ ने कहा।

''हाँ, और लैंस बनने में भी तो एक–दो दिन लगते हैं, इसलिए बुधवार की शाम तक ही मिल पाएगा चश्मा।'' पिताजी कहने लगे।

तब तक मेरा काम कैसे चलेगा, पिताजी?'' धैर्य की आवाज रुआँसी हो आई थी।

''तो अपनी वस्तुएं सँभालकर क्यों नहीं रखते तुम? पुराना चश्मा सँभालकर रखा होता तो अधिक परेशानी न होती न तुम्हें।'' पिताजी बोले।

''पिताजी, मैंने सोचा कि अब नया चश्मा बन तो गया ही है। अब पुराने की क्या आवश्यकता पड़ेगी, इसीलिए उसे पता नहीं कहाँ रख दिया।'' धैर्य ने जैसे सफाई दी।

''बस तुम्हारी यही आदत तो ठीक नहीं है धैर्य बेटा। जो चीज तुम्हारे काम की नहीं होती, उसे तुम बिलकुल

सँभालकर नहीं रखते।'' पिताजी ने कहा।

''मगर पिताजी! अगर हम पुरानी सब चीजों को सँभालकर रखने लगें, तो घर में जगह ही नहीं बचेगी।'' धैर्य ने अपनी बात कही।

''बेटा! मैं यह नहीं कहता कि हर पुरानी चीज को सँभालकर रखा जाए। ऐसा करने पर तो पूरा घर रद्दी का गोदाम बन जाएगा। जो चीजें काम की नहीं रह गईं, उन्हें फेंक देने या कबाड़ में बेच देने में कोई बुराई नहीं। लेकिन कुछ चीजें ऐसी होती हैं जो बाद में कभी आवश्यकता पड़ने पर काम आ सकती हैं। ऐसी चीजों को तो सँभालकर रख लेना चाहिए न कहीं।'' पिताजी समझा रहे थे धैर्य को।

''जी पिताजी।'' जवाब में बस इतना ही कह पाया धैर्य।

''कुछ महीने पहले तुम्हें दाँत में दर्द हुआ था। तब डॉक्टर ने तुम्हें दाँत दर्द की दवा दी थी। तब यह भी कहा था डाक्टर ने कि अगर फिर कभी ऐसा दर्द हो तो यही दवाई फिर से ले सकते हैं। मैने वह दवाई तुम्हें दे दी थी। वह दवाई लेने से एकाध दिन में तुम्हारा दाँत का दर्द ठीक हो गया था। पर बाकी बची दवाई तुमने न जाने कहाँ रख दी थी। कुछ दिनों बाद जब तुम्हें फिर से दर्द हुआ तो बाकी बची वह दवाई घर में कहीं मिली ही नहीं। पूरी रात तुम दर्द के मारे सो नहीं पाए थे। अगले दिन तुम्हें डॉक्टर को दिखाने के लिए मुझे कार्यालय से आधा दिन की छुट्टी लेनी पड़ी थी। तुम भी उस दिन विद्यालय नहीं जा पाए थे। अगर तुमने बाकी बची हुई दवा को सँभालकर रखा होता तो ऐसी स्थिति नहीं होती न!'' पिताजी कहते जा रहे थे।

उत्तर में धैर्य कुछ नहीं बोला। बस उसने अपना सिर झुका लिया।

''अपने ट्यूशन शिक्षक का फोन नम्बर भी हो तो इससे इधर-उधर कहीं रख दिया था। बाद में कितनी परेशानी हुई थी।'' माँ ने कहा।

''हाँ, वह अपने ट्यूशन शिक्षक वाली बात भी याद है न तुम्हें?'' माँ की बात सुनकर पिताजी धैर्य से कहने लगे, ''उन्होंने अपना फोन नं. तुम्हें एक कागज पर लिखकर दिया था ताकि अगर कभी आवश्यकता पड़े तो उनसे बात की जा सके। आमतौर पर बात करने की आवश्यकता पड़ती नहीं थी क्योंकि वे घर में आकर तुम्हें पढ़ाते थे, लेकिन तुम्हारे नाना जी की मृत्यु हो जाने पर हम लोगों को अचानक कानपुर जाना पड़ गया था। जाने से पहले तुम्हारे ट्यूशन शिक्षक को यह बताना आवश्यक था कि हम लोग कुछ दिनों तक घर में नहीं होंगे, लेकिन उन्हें बताते कैसे? उनका फोन नम्बर तुमने न जाने कहाँ रख दिया था।''

''और इसी कारण उन को हमारे घर आना पड़ा और फिर हमसे फोन पर बात करनी पड़ी, तब जाकर उन्हें पूरी बात पता चली।'' माँ ने बात पूरी की।

धैर्य सिर झुकाए चुपचाप माता-पिता की बातें सुन रहा था।

''बेटा! तुम्हारी यह आदत ठीक नहीं है। इससे आगे चलकर तुम्हें पता नहीं क्या-क्या हानियाँ उठानी पड़ें'' पिताजी समझा रहे थे धैर्य को।

पिताजी की बात सुनकर पहले तो धैर्य कुछ देर तक चुप रहा फिर कहने लगा, ''ठीक है पिताजी मैं ध्यान रखूँगा आगे से, पर मेरा चश्मा...'' कहते-कहते धैर्य चुप हो गया।

''चलो, मैं चलकर ढूँढता हूँ तुम्हारा चश्मा। घर में ही होगा कहीं, जाना कहाँ है।'' कहते हुए वे कुर्सी से उठे और धैर्य के कमरे की ओर चलने लगे। माँ और धैर्य भी उनके पीछे चल पड़े।

धैर्य के कमरे में पहुँचकर पिताजी बोले, ''तुम दोनों एक बार फिर से चश्मा ढूँढो, मैं भी ढूँढता हूँ।''

उसके बाद बहुत देर तक वे तीनो धैर्य का पुराना चश्मा ढूँढते रहे।

तभी अचानक पिताजी के मुँह से निकला, ''मिल गया चश्मा। मिल गया चश्मा!''

माँ और धैर्य पिताजी की ओर देखने लगे। पिताजी हाथ में पुराना चश्मा लिए खड़े थे।

''कहाँ से मिला चश्मा?'' माँ की आवाज में आश्चर्य का भाव भी था और प्रसन्नता का भी।

''धैर्य के कमरे में हम जो पुराने समाचार पत्रों की रद्दी रखते हैं न, यह चश्मा उन्हीं के बीच में था कहीं।'' पिताजी ने पुरानी अखबारों के ढेर की ओर संकेत करते हुए बताया।

धैर्य ने जल्दी से आगे बढ़कर उन के हाथ से चश्मा ले लिया और उसे आँखों पर लगाने लगा।

धैर्य को ऐसा करते देख पिताजी एकदम से कहने लगे, ''अरे, यह क्या कर रहे हो धैर्य? धूल-मिट्टी से सने इस चश्मे से बिल्कुल भी स्पष्ट दिखाई नहीं देगा। पहले इसे साबुन पानी से अच्दी तरह स्वच्छ तो कर लो।''

''जी अच्छा'' कहते हुए धैर्य स्नानघर की ओर चला गया- चश्मा धोने के लिए।

''चलो चश्मा मिल गया।'' माँ पिताजी से कहने लगीं।

''इतनी देर तक अच्छी तरह से ढूँढा, तब जाकर मिला।'' पिताजी ने कहा।

''धैर्य और मैंने तो पुराने समाचार पत्रों में ढूँढा ही नहीं था चश्मा। हमें लगा कि वहाँ पर तो क्या ही होगा यह।'' माँ बोलीं।

तभी चश्मा स्वच्छ करके धैर्य स्नानघर से लौट आया। फिर काँचों को कपड़े से पोंछकर उसने चश्मा लगा लिया।

''कैसा लग रहा है अब? पिताजी ने पूछा।

''बहुत स्पष्ट तो दिखाई नहीं दे रहा, पर बिना चश्मे से तो यह पुराना चश्मा लगाना ठीक है।'' धैर्य ने उत्तर दिया।

''जो सिरदर्द तुम्हें हो रहा था, वह भी कुछ कम हो जाएगा अब।'' माँ ने कहा।

''पर यह सिरर्द पूरी तरह तो तभी ठीक होगा जब तुम्हारा नया चश्मा मिलेगा।'' पिताजी ने कहा।

''कोई बात नहीं पिताजी, तब तक इसी चश्मे से काम चला लूँगा किसी तरह।'' धैर्य बोला।

''अब समझ आया न बेटा! कि किसी चीज को सँभालकर रखना कितना आवश्यक होता है।'' वे कह रहे थे।

''जी पिताजी, मुझे आ गया है समझ।'' धैर्य ने उत्तर दिया।

● **गुरुग्राम (हरियाणा)**

।। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस : २८ फरवरी ।।

पानी रे पानी तेरा रंग कैसा

प्रसंग

गोपाल माहेश्वरी

सन् १९२१। भूमध्य सागर से गुजरते जहाज की डेक पर खड़े यात्री दूर दूर तक फैली अगाध जलराशि की सुन्दरता पर मुग्ध थे। अनन्त आकाश के नीचे समुद्र का गहरा नीला जल सबका मन मोह रहा था लेकिन उसी यात्री जहाज पर एक ऐसा व्यक्ति भी उपस्थित था जो अपने ही मस्तिष्क में अभी-अभी कौंधे एक प्रश्न से उलझ रहा था। व्यक्ति का नाम था चन्द्रशेखर वेंकट रमन, बचपन से ही आसाधारण मेधावी होनहार छात्र रहा था वह। अभी जिस प्रश्न ने उसे एक लम्बी विचार यात्रा पर भेज दिया था वह प्रश्न था कि पानी तो एक रंगहीन द्रव है तो फिर समुद्र के इतने सारे पानी में यह नीला रंग कैसे घुल गया?'' जहाज की यात्रा तो अपने निश्चित समय में निर्धारित यात्रा तय कर समाप्त हुई पर इस युवक के मस्तिष्क में पानी नीला क्यों दिख रहा है?''उनकी विचार यात्रा तर्कों की पतवारें चलाती सात वर्ष तक चलती रही। और तब थमी जब २८ फरवरी १९३० को उसने इस विषयक खोज से सारे विज्ञान विश्व को चकित कर दिया। उन्हें नोबुल पुरस्कार मिला। और १९८६ में भारतवर्ष में इस स्मृति दिवस २८ फरवरी को **राष्ट्रीय विज्ञान दिवस** घोषित कर दिया।

जब जब आँखें खुली रहती है हम सब ही अपने चारों ओर बहुत कुछ देखते रहते हैं पर वैज्ञानिक वे बनते हैं जो किसी वस्तु के होने का कारण जानने के लिए उसे जान लेने तक जुटे रहने की कला जानते हैं। ''आज ब्लू है पानी पानी'' गाने वाली पीढ़ी ''पानी रे पानी तेरा रंग कैसा'' जैसे प्रश्नों से उलझ कर ही बना पाई है अपने राष्ट्र को विज्ञानी राष्ट्र।

SURYA

Energising Lifestyles

सूर्या के प्रोडक्ट्स भारत ही नहीं बल्कि विश्व के 50 से अधिक देशों में निर्यात किये जाते है। सूर्या का संकल्प भारत के जन-जीवन में विकास की रोशनी भरने के साथ-साथ देश की प्रगति में अपना योगदान देना भी है।

SURYA ROSHNI LIMITED

E-mail: consumercare@sroshni.com I www.surya.co.in I Tel.: +91-11-47108000, 25810093-96

Toll Free No. : 1800 102 5657

/suryalighting I /surya_roshni

अजेय दुर्ग

रायगढ़ के किले का निर्माण पूर्ण होने पर छत्रपति शिवाजी महाराज उसे देखने आए। विस्तार से एक-एक निर्मिति का निरीक्षण करने के बाद उन्हें पूर्ण सन्तोष हुआ और उन्होंने कहा- ''यह दुर्ग अजेय है। मैं इसे अपनी राजधानी बनाऊँगा।''

''कोई भी दुर्ग अजेय नहीं होता, शिवबा!'' माता जीजाबाई ने टोक दिया, ''क्या तुम समझते हो कि रायगढ़ के दुर्ग में कोई ऐसा स्थान नहीं है, जहाँ से उसमें चढा जा सकता हो।''

शिवाजी चकित थे। सचमुच उन्हें ऐसा कोई स्थान नहीं दिखाई देता था, जहाँ से किले में पहुँचना संभव हो। फिर भी वे माँ के कथन का महत्व जानते थे। जरूर इसमें कोई महत्वपूर्ण तत्व निहित है। उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। बात उनके मन मस्तिष्क में गड़ गई थी।

उन्होंने रामगढ़ को राजधानी बनाया। हँसी-खुशी और उत्सव के दिन गुजरे ही थे कि एक दिन घोषणा कर दी गयी- ''जो भी व्यक्ति मुख्य द्वार को छोड़कर किसी अन्य मार्ग से किले के अग्र शिखर पर पहुँच कर यहाँ लहराते ध्वज के नीचे एक कपड़ा बांध देगा, उसे पुरस्कार दिया जायेगा।''

''क्या नाम है, तुम्हारा,'' महाराज ने पूछा।

''भाऊ महार'' आगन्तुक ने उत्तर दिया।

''किले पर क्यों चढ़ना चाहते हो?''

''पुरस्कार पाने के लिए। मुझे रुपयों की जरूरत है।''

''रुपये मैं तुम्हें यों ही दे दूंगा। अपने प्राणों को संकट में क्यों डालते हो? किले पर चढ़ना बहुत कठिन है।'' शिवाजी ने उसे समझाने की कोशिश की?

''मैं बिना परिश्रम की कमाई न लूँगा। महाराज मुझे किले में चढ़ने की अनुमति दें।''

महाराज ने स्वीकृति दे दी।

*****

किले का मुख्य द्वार बन्द कर दिया गया। चौकसी बढ़ा दी गयी। महाराज स्वयं अपने विश्वस्त सहयोगियों के साथ द्वार के बाहर चौक पर बैठ गये। भाऊ उन्हें प्रणाम कर किले के बाहर स्थित जंगल में गायब हो गया।

बचपन से गरीबों में पले भाऊ को साहसिक कार्यों में बड़ी रुचि रही थी- ऊँचे-ऊँचे पेड़ों पर चढ़ जाना, किलों की ऊँची दीवालों पर चढ़ना आदि उसके शौक थे। वह पेड़ों के झुरमुट के बीच में रास्ता खोजते वह किले के पार्श्व में स्थित पहाड़ की सीधी खड़ी चढाई तक आया। साहस और परिश्रम ने उसे सीधी चट्टानों के बीच भी रास्ता बनाने में सहयोग किया। अब दुर्ग की ऊँची प्राचीर सामने थी। वह दीवाल की बगल में उगे एक ऊँचे पेड़ पर चढ़ने लगा। आखिर, पेड़ की चोटी पर पहुँच गया तो किले के अन्दर का सारा दृश्य दिखाई देने लगा। पेड़ से लपक कर किले की दीवार पर पहुँचा और फिर कोटों परकोटों से होकर किले के अंदर प्रवेश कर गया । पहरेदारों की दृष्टि से बचता छुपता सीढियों से होकर ध्वज-स्तम्भ के पास पहुंच गया।

अब वह निर्भय था। उसने अपना फटा-पुराना दुपट्टा झण्डे के नीचे बांध दिया। कपड़ा ध्वज के साथ लहराने लगा।

महाराज के संकेत पर उसे उनके समक्ष लाया गया। महाराज ने उसे पुरस्कार दिया और उसके साहस की सराहना भी की। फिर पूछा– ''मगर भाऊ! अब यह तो बता दो कि यह कैसे संभव हुआ?''

भाऊ ने सारी बातें स्पष्ट बता दीं। छत्रपति ने उस स्थान पर पहरा बढ़ा दिया। लेकिन उनके मन में माँ की कही बात रह–रहकर आती रहती– ''कोई भी दुर्ग अजेय नहीं होता।'' वे सोचते क्या अब भी रायगढ़ अजेय नहीं। क्या कोई और भी ऐसा स्थान है, जहाँ से किले में आया जाया जा सकता है?

*****

उसका नाम हीराकनी था। नाम के अनुरूप ही उसका रूप था। दूध बेचने सबेरे किले में आती और शाम होने के पहले लौट जाती। पति–पत्नी में परस्पर गहरा विश्वास था। उनका हीरे–सा अनमोल शिशु। हीरामनी दूध बेचने जाती, लेकिन उसका मन अपने बच्चे पर ही लगा रहता।

उस दिन शाम को जब लौटने लगी तो एक घर में एकाकी स्त्री को प्रसव कष्ट से पीड़ित पाया। मातृहृदय ने माँ की पीड़ा को अनुभव किया और उसको सहयोग देते कब शाम हो गई, यह पता ही न चला। प्रसव कार्य पूर्ण होने के बाद, जब वह लौटी तो किले का दरवाजा बन्द हो चुका था। लाख अनुनय विनय के बावजूद, द्वारपाल ने छोटा द्वार भी न खोला । छत्रपति के कड़े आदेश थे किसी भी कीमत पर सूर्यास्त के बाद द्वार न खोला जाय।

विवश माँ अपने शिशु के लिए बिलखती रही। देर रात तक उसकी आवाज से पास–पड़ोस गूंजता रहा। रात घनी हुई, लोग सो गये। हीराकनी उठी और किले की छत पर जा पहुँची। नीचे देखा, घना अंधेरा। फिर भी दीवाल के सहारे सरक कर नीचे जा पहुँची।

सबेरा हुआ तो द्वारपाल ने हीराकनी की खोज करायी, कहीं पता न चला। किले के भीतर से किसी का गायब हो जाना गम्भीर घटना थी। सिपाही भेजे गये। हीराकनी अपने घर पर सही सलामत थी। दूध बेचने के लिए आने की तैयारी कर रहीं थी।

हीराकनी जहाँ से सरक कर उतरी थी, वहाँ भी पहरा कड़ा कर दिया गया। लेकिन अब शिवाजी के मन से 'अजेय दुर्ग' की बात निकल चुकी थी। मानव मन के लिए अजेय कुछ नहीं, यह समझ कर वे अधिकाधिक सतर्क व्यवस्था रखते।

।। समाचार ।।

राष्ट्रीय बाल साहित्य महोत्सव सम्पन्न

कटनी। दसवे राष्ट्रीय महोत्सव एवं पुस्तक मेला समिति कटनी के तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय बाल साहित्य महोत्सव राष्ट्रीय बाल कहानी प्रतियोगिता के पुरस्कृत बाल साहित्यकार भोपाल से डॉ. लता अग्रवाल दिल्ली से शिवचरण सिरोहा एवं प्रतियोगिता के निर्णायक देवपुत्र के कार्यकारी संपादक गोपाल माहेश्वरी आमंत्रित अतिथियों डॉ. कमल यादव पूर्व प्राध्यापक, समाज सेवी सुरेश सोनी, मथुराप्रसाद सोनी का परिचय एवं सम्मान समिति द्वारा किया गया। प्रथम एवं तृतीय पुरस्कृत बाल साहित्यकारों को सम्मान निधि के साथ ही शाल श्रीफल एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गए। पुरस्कृत कहानियों का वाचन बच्चों द्वारा मंच से किया गया। इसी क्रम में तात्कालिक कहानी एवं कविता लेखन के लिए छात्र–छात्राओं को बाल साहित्यकारों ने सूत्र दिए। तत्पश्चात नगर की सुपरिचित बाल साहित्यकार डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' के बाल उपन्यास आई तो आई कहाँ से, का उपस्थित अतिथियों ने विमोचन कर लोकार्पित किया।

द्वितीय सत्र में बच्चों के आयोजित बाल चौपाल में व्यक्तित्व विकास और सफलता की कुंजी विषय पर बच्चों को सूत्र दिए गए। साहित्यकारों ने बच्चों से सार्थक संवाद भी किये। संध्याकाल में बाल कल्याण साहित्य सृजन केन्द्र के बच्चों द्वारा भव्य बाल कवि सम्मेलन केन्द्र निदेशक डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' के निर्देशन में सम्पन्न हुआ जिसमें बाल कवियों ने प्रस्तुति दी।

बाँस की आत्मकथा

संवाद
रामगोपाल 'राही'

निर्जन में झुरमुटों के आजू बाजू आपस में बतियाते पेड़ों में से वट वृक्ष बोला– ''हम सब हजारों प्रजाति के पेड़ों में पीपल का पेड़ श्रेष्ठ है जो चौबीस घंटे प्राण वायु दे संसार के लोगों को जीवन दान देता है।''

इसी बीच गूलर का वृक्ष बोल पड़ा ''पीपल भाई! यह तुम्हारे पास लम्बा लम्बा छोटी–छोटी पत्तियों वाला कैसा पेड़ है? यह क्या हवा देता होगा यह क्या काम आता होगा, मेरी समझ में यह अनुपयोगी लगता है।''

अनजान गूलर की बात सुन पीपल ने कहा, ''नहीं ऐसी बात नहीं हैं, यह बहुत उपयोगी पेड़ बाँस है।'' पीपल ने आगे कहा ''सृष्टि में ऐसी कोई वनस्पति, जड़ी बूँटी, यहाँ तक घाँस व पेड़ पौधे सभी उपयोगी हैं।'' पीपल ने फिर जोर देते कहा, ''और फिर बाँस तो संसार में सबसे ज्यादा काम में आने वाला होता है।''

पीपल की बात सुन बाँस थोड़ा हँसा इस पर पीपल ने कहा बाँस के बारे में अगर मैं कहूँ कि यह बहुत बेजोड़ महत्वपूर्ण है, तो आप विश्वास नहीं करेंगे, लेकिन जब आप बाँस के गुण और काम के बारे में सुनेगें तो आप सभी लोहा मान जाएंगे।''

पीपल ने आगे कहा ''आज बाँस की आत्मकथा खुद बाँस के मुँह से ही सुनते हैं।'' पीपल की बात सुन बाँस बोला– ''पीपल भाई! मैं अपनी आत्मकथा कहूँगा आप सभी को लगेगा मैं छोटा मुँह बड़ी बात कर रहा हूँ।''

बाँस की बात सुनकर पीपल बोला– ''नहीं नहीं, पेड़ घांस सब भाई भाई पर गुण सबके अलग अलग होते हैं, मैं तुम्हारे गुणों को जानता हूँ पर तुम्हारे ही मुँह से तुम्हारी गुण युक्त आत्मकथा सुनेगें।''

बाँस सबको प्रणाम कर बोलने लगा– ''मेरी आत्म कथा बहुत लम्बी है, मैं उष्ण कटिबंधीय बड़ी घांस हूँ, मानसून वाले जंगलों में खूब उगता हूँ पीपल भाई जानते हैं मैं व्यक्ति का जन्म से लेकर जीवन भर बाद में मरण तक तथा मृत्यु के बाद भी सभी लोगों का साथ निभाता हूँ। संसार में लोगों का मेरी चोली दामन का साथ है।''

बाँस आगे बोला ''जानते हो निर्धन का घर बाँस से बना होता है, गरीब लोग जन्म के बाद बच्चे को डाले (बड़ी टोकरी, ठाँगले में) सुला झूले में सुलाते आए हैं।

वह भी एक जमाना था जब मेरी पहुँच गरीब की झोपड़ी से नवाब की छड़ी तक होती है।'' बाँस की बात सुन सभी पेड़ हँसने लगे।

बाँस फिर बोलने लगा ''प्राकृतिक वन संपदा में मेरा भी नाम है।''

बाँस बोला– ''कई जगह वनवासी गरीबी से प्रभावित लोग बाँस फल, पैरी के पास निकले दानें को खा पेट भर लेते हैं, गेहूँ की तरह मेरे दाने होते हैं, लोग इन्हें सुखाकर पीसकर कर रोटियां बनाते हैं।

भूख से पीड़ित लोग बीजों को भात के रूप में पका कर खाते हैं, मेरे कोमल तनों, पत्तियों, कलियों की साग (सब्जी) व अचार बना कर खाया जाता है।

मेरी पत्तियाँ व गाठों पर सफेद पदार्थ से तवाशीर अर्थात् वंशलोचन, औषधि बनती है। अन्न न मिलने पर लोग मेरे पुराने बाँस के बीजों की रोटी, भात, सब्जी खा गुजारा कर लेते हैं।''

बाँस ने आगे कहा– ''मुझे मलाया भाषा में बम्बू, और अंतर्राष्ट्रीय साइन्स का नाम बैम्बूसा है।'' बाँस अब अपने काम बताने लगा– ''दर असल मैं एक क्षुपीय झाड़ीनुमा घाँस हूँ– घाँस होते हुए भी मेरा तना लम्बा व आपकी तरह काष्ठकीय होता है। मेरे तने में कोशिकाओं के संग तने की दीवारों में सिलिका नामक कड़े पदार्थ के कारण तना सख्त होता चला जाता है। मुझे कुदरत का वरदान है जो घाँस होते हुए भी पेड़ रूप में उगता हूँ।

सारे पेड़ उत्सुकता से बाँस की बातें सुन रहे थें। बाँस आगे बोला मैं यहाँ जंगलों में ही नहीं पहाड़ों पर बारह हजार फुट की ऊँचाइयों पर भी उगता हूँ। प्राकृतिक संपदा के साथ साथ मुझे गरीब की लकड़ी भी कहते हैं, गरीबों के छप्पर छाने में मेरा ही उपयोग होता है। आगे फिर बाँस बोला, मैं किस किस रूप में दुनिया भर में काम आता हूँ जरा सुनो। मेरी दो गाठों के बीच की जगह एक पोरी होती है, ग्रामीण लोग पोरी को बर्तन, बोतल व हुक्का के रूप में प्रयोग करते थे। आप यह नहीं भूलें भगवान श्रीकृष्ण की बाँसुरी मेरे तन की पौरी से ही बनी थी। पशुओं को मट्ठा पिलाने की नाल मेरी पोरी से ही बनती थी, नसेनी, सीढी,

चिक पर्दे, फर्नीचर, टोकरी, खिलौने, कंघी, ईंधन, कागज, चटाई, टोप, कलम, छड़ी, लाठी, डंडे, झाडू, ब्रुश, बाड़ तथा गृहपयोगी कई सामान, धनुष बाण यह सब मेरे तन को छील कर ही बनते आए हैं। मेरे सहारे से नट खेल दिखा अपनी आजीविका चलाते आए हैं।''

बाँस धारा प्रवाह बोले जा रहा था, ''बोला मंदिरों में वेद ध्वजा मेरे सिर पर लहराती है। पानी में नाव मेरी पतवार से ही चलती है, झूलों, परसों तम्बू कनात, शामियान टांगने में मेरा उपयोग छुपा नहीं।'' बाँस एक सांस में धारा प्रवाह बोले जा रहा था, सभी पेड़ बाँस की बातें ध्यान से सुनते जा रहे थे। बाँस फिर बोलने लगा, ''आप सब जानते होगें कृषि क्षेत्र में भी मैं बहुत काम आता रहा हूँ, पौधों को सहारा मुझ से ही मिलता है। खेती के कई कामों में मेरा उपयोग होता है।

समाज में कई उपयोग हैं मेरे, दशहरा पर रावण, मेघनाथ के पुतले मेरी ही खपच्चियों से बनते हैं, बेड़े के रूप में नदियाँ तथा बंदरगाहों पर माल चढ़ाने उतारने के लिए तथा मंच बनाने के लिए मेरा ही उपयोग होता है।

पहले से पिचकारी मेरी ही पोरी से बनती आयी है, कागज बनाने में भी मैं काम में आता हूँ, गहराई नापने के लिए मेरा ही उपयोग होता रहा है।'' बाँस कहते-कहते यहीं नही रुका- उसने इतिहास की बात भी सुना दी, कहा याद करो कवि चँन्द्र वरदायी का दोहा-

''चार बाँस चौबीस गज अंगुल अष्ट प्रमाण।
ऐते पर सुल्तान है मत चूके चौहान।।

बाँस बोला इसमें सारा खेल बाँस का ही था, चौबीस गज बाँस, तीर कमान सभी बाँस के थे। शब्द बाण का निशाना सटीक लगा तीर गौरी के सीने में लगा था।

अपनी बात जारी रखते हुए बाँस कहने लगा मैं बहुत क्रोधी हूँ, मेरे में दावानल होती है, जोर की हवा चली बाँस टकराए, सारा जंगल धधकने लगता है।'' अब बाँस बोलते-बोलते थक सा गया था, बाँस ने अंतिम बात बताते हुए कहा व्यक्ति जब मरता है, मेरी टिक्की, (मेरी बनी अर्थी) पर ही महायात्रा पर जाता है। सबसे अखिरी कपाल क्रिया भी तो मेरे डंडे से पूरी होती आई है, बोलो अब तो आप समझ गए होगें, संसार में है न लोगों से मेरा चौली दामन का साथ।''

अब बीच में पीपल बोला ''बाँस भाई! कोई राज की बात रह गई है वो भी सोच कर बताओ ताकि लोगों को ध्यान रहे।''

पीपल की बात सुन बाँस बोला ''हाँ, है। वर्षा के दिन में कोई मेरे नजदीक नहीं आवें, क्योंकि बादलों की गर्जना के साथ मेरी काफी वृद्धि होती है।

बाँस की बात पूरी होते ही सब पेड़ बोले वाह!

● **लाखेरी (राज.)**

।। समाचार ।।

चक्रधर शुक्ल को मिला प्रभा स्मृति सम्मान

शाहजहाँपुर। गांधी पुस्तकालय द्वारा आयोजित प्रभा स्मृति बाल साहित्य सम्मान समारोह में देश के नामचीन बाल साहित्य लेखक एकत्र हुए। गुड़गाँव, हरियाणा के सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार श्री घमंडीलाल अग्रवाल और कानपुर के चक्रधर शुक्ल को सातवां और आठवाँ प्रभा स्मृति बाल साहित्य सम्मान प्रदान किया गया। समारोह अध्यक्ष कार्यवाहक जिलाधिकारी, मुख्य विकास अधिकारी महेन्द्र सिंह तंवर ने।

सम्मान स्वरूप दोनों रचनाकार को प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिन्ह, अंग वस्त्र, श्रीफल और तीन हजार एक सौ रूपये की राशि भेंट की। उन्होंने कहा कि बाल साहित्य के अभाव में उन्नत राष्ट्र की कल्पना नहीं की जा सकती। बाल साहित्य हमारी सभ्यता और संस्कृति का संरक्षक है।

बाल कविता गोष्ठी का भी आयोजन किया गया जिसमें झांसी के राजा भइया गुप्ता, राजाभ, लखीमपुर खीरी के रामकुमार गुप्त, लखनऊ के गौरी शंकर वैश्य विनम्र और बृजेश मिश्र, राघव शुक्ल, दिनेश रस्तोगी, डॉ. नागेश पांडेय, डॉ. अरशद खान के अतिरिक्त बच्चों ने भी कविताएँ सुनाईं।

वक्ताओं ने बाल साहित्य के अधिकाधिक प्रसार की आवश्यकता व्यक्त की।

मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति वी सी गुप्त ने कहा कि बच्चों के हाथों में बाल साहित्य की पुस्तक देने का अर्थ उनके सपनों में पंख देना है। साहित्य बच्चों को सोच और संस्कार देता है।

इस अवसर पर डॉ. नागेश पांडेय संजय के सम्पादन में प्रकाशित बाल पत्रिका बाल प्रभा के नए अंक का लोकार्पण भी किया गया। विजय ठाकुर और रामकुमार गुप्त की पुस्तकों का लोकार्पण भी हुआ।

यू एफ ओ और एलियंस

सचित्र विज्ञान चर्चा-
संकेत गोस्वामी

लम्बे समय से कई लोगों का सोचना ये रहा है कि दूसरे ग्रहों पर भी पृथ्वी की तरह जीवन मौजूद है. और वहां के प्राणी यानी एलियन हमारी पृथ्वी पर आते रहे हैं. वे जिस अंतरिक्ष यान में हमारे ग्रह तक आते हैं वे यू.एफ.ओ. हैं यानी हमारे लिए अनआइडेन्टीफाइड फ्लाइंग ऑब्जेक्ट हैं.

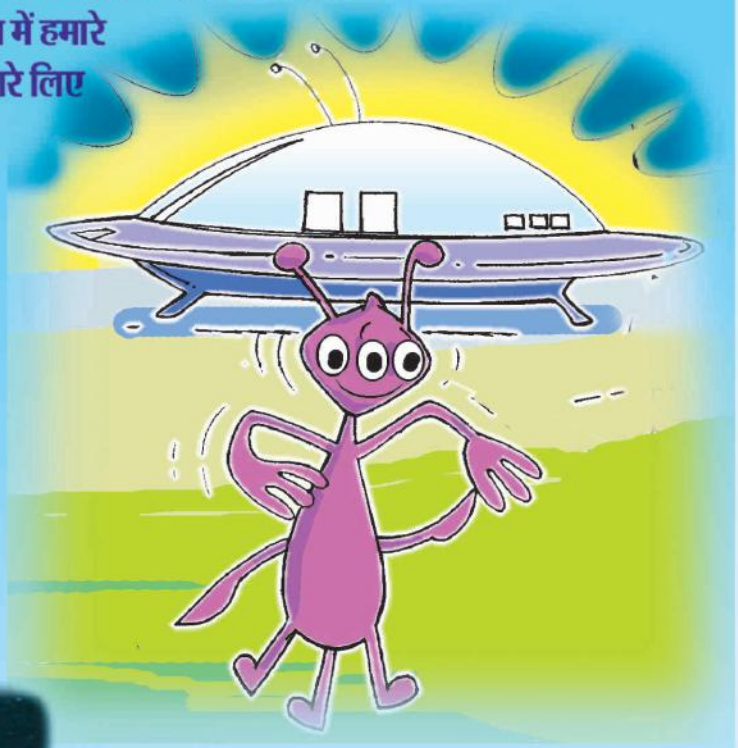

कई लोगों ने उन यू.एफ.ओ. को ना सिर्फ देखने का दावा किया है बल्कि उनकी तस्वीरें भी प्रमाण के रूप में प्रस्तुत की हैं. लेकिन इन बातों पर आज भी कोई ठोस आधार सामने नहीं है. लेकिन एलियनों को लेकर इतनी बातें, कल्पनाएं और कहानियां पेश की जा चुकी हैं कि कभी-कभी ये सब बातें सच सी लगती हैं. आज भी कोई यह नहीं बता सकता कि उड़नतश्तरी हो या कोई और साधन ... पर दूसरे ग्रहों के प्राणियों के पास ऐसी कौनसी शक्ति है? जो वे दूसरे ग्रहों से हमारे ग्रह तक आसानी से जा आ सकते हैं.

1940 के बाद इन बातों को बेहद हवा मिली कि कई लोगों ने तश्तरी के आकार में अत्याधिक तेज गति के विमान देखें हैं. सन् 1946 में अकेले स्वीडन में करीब 1000 बार उड़नतश्तरी देखे जाने की सूचनाएं दर्ज हुई। अधिकतर सूचनाओं में उड़ने वाली चीजों को राकेट के आकार-प्रकार का बताया गया, जिनकी कभी कोई पहचान न हो सकी।

कुछ वैज्ञानिकों ने ऐसी रेडियो तरंगे प्राप्त होने की बातें भी की हैं जो अंतरिक्ष से हमें प्राप्त हुई हैं. कई वैज्ञानिकों ने हमसे ज्यादा विकसित जीवन की दूसरे ग्रहों में उपस्थिति मानकर खुद रेडियो तरंगें भेजी हैं और कई संकेत भेजे हैं. लेकिन हमसे तारों की दूरी को देखते हुए एलियनों से हमारा कोई सच्चा सम्पर्क कभी हो भी गया तो इसमें हजारों साल लग चुके होंगे जब हमारी भेजी तरंगे या संकेत उन तक पहुंचेगा.

समाप्त

।। टिहरी का नन्हा स्वतंत्रता सेनानी ।।

श्रीदेव सुमन

कहानी

सुरेन्द्र अंचल

सन् १९४३ का फरवरी का माह।

देहरादून जेल की सीलन भरी काल कोठरी। इस कोठरी में बंद 'जालगाव' का एक अठारह उन्नीस वर्ष का नवयुवक देव सुमन। अनाथ विधवा माँ का इकलौता बेटा।

हाथों में हथकड़ियाँ और पावों में बेडियाँ, सीखचों को पकड़े हुए आकाश में उड़ते स्वछन्द पक्षियों को देखकर सोच रहा था अंग्रेज तो विदेशी हैं किन्तु ये राजा, नवाब, जागीरदार तो देशी हैं, ये अंग्रेजी सरकार के हाथों की कठपुतलियाँ क्यों बन गए हैं। प्रजा पर इतने जुल्म? रक्षक ही भक्षक।

लाला लाजपतराय जी और बालगंगाधर तिलक जी की स्वतंत्रता की लड़ाई में वह भी अपनी आहुति देगा, अवश्य देगा।

उसकी माँ जंगल में लकड़ियाँ बीन, बेच कर पेट भरती थी, राजा के सिपाहियों ने लकड़ियाँ छीन लीं और इतनी लाठिया बरसाई की वह अपंग हो गई। नहीं! ये अत्याचार अब बंद होने ही चाहिए।

उसकी मुट्ठियाँ भिंच गई, जेल में उसकी हुंकार गूंज उठी– ''हाँ, स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है टिहरी को अत्याचारों से मुक्त करवाऊँगा। देश को अंग्रेजों से मुक्त करवाऊंगा। जय हिन्द!''

जेल का एक सिपाही आया, टिहरी के राजा जी खुद मिलने आए हैं चल!

इसके मुँह पर व्यंग की मुस्कान फैल गई। कहा ''चलो।''

सचमुच महाराज स्वयं उससे मिलने के लिए आए। श्रीदेव के कंधे को थपथपाते हुए कहने लगे– ''श्रीदेव! तुम बहादुर लड़के हो। इन क्रांतिकारियों ने तुम्हें पथभ्रष्ट कर दिया है। तुम्हारी माँ तारादेवी अब बूढी हो गई है। अपनी हठ छोड़ो। साथ चलो, अच्छी नौकरी दे दूंगा। तुम्हारे साभी अपराध क्षमा। शांति से रहो–''

''श्रीमान्! मैं माँ की सेवा ही तो कर रहा हूँ। टिहरी गढ़वाल की माटी मेरी जन्मभूमि है, यह मेरी ही नहीं हजारों बेटों की भी है।''

'' पागल मत बन। तेरी बूढी माँ भूख से मर जाएगी।''

''मेरी माँ! अभी तीन दिन पहले ही वह मुझे आशीर्वाद देने आई थीं। कह रही थीं आज पूरा टिहरी राज्य मुझको प्रेम और सम्मान की नजर से देख रहा है। एक माँ के लिए इससे बढ़ कर क्या चाहिए बेटे? उसे खरीदने का प्रयत्न मत कीजिए श्रीमान्।''

राजा जी क्रोध में भन्ना गए– ''कुत्ते की मौत मरना चाहता है तो मर!

श्रीदेव सुमन के लिए फिर वही सीलन– भरी काल कोठरी पास में पड़ी रोटियाँ बदबू मार रही थीं। लकड़ी का बुरादा और रेत मिली रोटियाँ, वाह रे अंग्रेज।

फरवरी सन् १९४३, वह आमरण अनशन पर बैठ गया।

सरकार जानती थी कि श्रीदेव की मौत सारे टिहरी

गढ़वाल में तूफान ला देगी।

उसकी आँखों के सामने जैसे उसका गाँव ही आ खड़ा हुआ, ''जालगाँव'' पहाड़ियों की गोद में किलकारियाँ मारता सा छोटा सा गाँव, जब वह दो तीन वर्ष का था– उसके पिता जमीदार की बेगार से थक कर मर गए थे, माँ तारादेवी ने उसे हथेली के छाले की तरह पाला पोसा, 'चमूबा' में वह आठवीं तक पढ़ा एक छोटे से विद्यालय में अध्यापक बन गया।

पिछली बातें याद आने लगी। तब वह तेरह वर्ष का ही था।

माँ ने आवाज दी, ''बेटा श्रीदेव! रोटियाँ सिक गई हैं। आजा खा ले।''

श्रीदेव को काका की बातों में बड़ा रस आ रहा था उत्तर दिया– ''अभी भूख नहीं है माँ, देर से खाऊँगा।''

काका कह रहा था– ''राजा का राजा कौन है? राजा जी ने जंगल की लकड़ी काटने की सख्त मनाई करवा दी है परन्तु स्वयं पेड़ कटवा कर बेचने लगे हैं, हम किसानों की तो रोजी रोटी ही ये पेड़ हैं किसानों ने प्रार्थना की, इस पर पन्द्रह लोगों को भून दिया गया।''

''कोई नहीं सुनता तो अंग्रेज सरकार से शिकायत क्यों नही कर देते हम लोग काका?''

''अरे पगले! अंग्रेज सरकार ही तो यह सब अत्याचार करवा रही है। बस, अब जाओ रोटियाँ खा लो बेटे।''

श्रीदेव भारी मन से भोजन करने बैठा। वह विचारों में डूबा हुआ था। माँ ने पूछा ''क्या बात है रे! जी तो अच्छा है?'' ''माँ। इस मिट्टी की सौगन्ध खाकर कह रहा हूँ कि मैं ऐसे अत्याचारी शासन को सबक सिखाऊँगा।''

माँ, आँखें फाड़कर इतनी बड़ी और भयंकर बात इतने छोटे मुँह से निकलते देखने लगी। श्रीदेव की आँखों में दृढ़ निश्चय की चमक झिलमिला रही थी।

अब वह अपने साथियों से राजा के अन्याय से जूझने की बातें खुलकर करने लगा।

बातें महाराज तक पहुँची। पहले तो उन्होंने उसे नादानी ही समझी। जब बातें अधिक ही बढ़ने लगी तब अपने आदमियों से कहा– ''अरे, बालक ही तो है, भूत प्रेत तो है नहीं। मेरे पास बुला लाओ।''

महाराज के सामने लाया गया। श्रीदेव ने दो टूक उत्तर दिया ''मेरा जन्म श्रीमान की बेगार के लिए नहीं हुआ बल्कि सामंती अत्याचारों को नाश करने के लिए हुआ है।''

राजाशाही के पैने नाखून और भी पैने होने लगे– जनवरी १९३५ में टिहरी प्रजामण्डल की स्थापना हुई। तब वह उन्नीस वर्ष का था। वह भी प्रजामण्डल का विशेष सदस्य बन गया था। गाँव–गाँव में जाकर प्रजामण्डल की बातें–देश की आजादी की बातें, महाराज के अत्याचारों की बातें, लोगों को समझाने लगा। संगठित करने लगा। उसे गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया किन्तु जनता के रोष को देखते हुए, उसे वापस छोड़ देना पड़ा था।

देश में स्वतंत्रता की चिंगारी अब लपटें बन रही थीं।

उसे याद आया सन् १९४२ में क्रांतिकारियों के साथ फिर गिरफ्तारी कर आगरा जेल में भेजा गया। पूरे एक साल बाद वापस छुटा था। तब जवाहर लाल नेहरू ने उसे कहा था– श्रीदेव, तुम्हे देहरादून में नही रहना चाहिए, राजाशाही का अजगर तुम्हें निगलने के लिए मुँह फाड़े बैठा है। पूरा हिन्दुस्तान ही तुम्हारा कार्यक्षेत्र है। दिल्ली चलो।

वह माना नहीं ''नहीं, पहले मेरा कार्यक्षेत्र मेरी जन्मभूमि ही है। मैंने अपनी माँ के सामने संकल्प लिया था कि टिहरी की राजाशाही को जड़मूल से उखाड़ूँगा।''

और वह टिहरी चला गया। उसके वहाँ पहुँचने की बात आग की तरह फैल गई। राजशाही सावधान हुई विद्रोह की लहर ने महाराजा की नींद हराम कर दी। उसकी माँ को कहलाया– ''तारा! अपने बेटे को समझा। क्यों अपनी मौत को बुला रहा है?''

किन्तु वह वीर माता थी, उत्तर दिया ''मेरे बेटे को कोई लाभ या भय नहीं डिगा सकता।''

सन् १९४२ श्रीदेव को वापस गिरफ्तार कर लिया

गया। तब से वह देहरादून की इस कालकोठरी में खतरनाक क्रांतिकारी के रूप में बंद है, जेल में भोजन बहुत खराब दिया जाता था। आटे में भूसा और कंकड़ मिलाया जाता था। उसने आमरण अनशन शुरु कर दिया बीस दिन हो गए। नेहरू जी तक यह बात पहुँची तो कहलवाया ''अनशन तोड़ दो। तुम्हारी अभी देश को बहुत आवश्यकता है।''

उसने जवाब भिजवाया ''जब तक कैदियों को भूसा व रेत मिली रोटियाँ मिलती रहेगी, अनशन नहीं तोड़ सकता।''

अब उसका शरीर बहुत टूट चुका था। मगर मन नहीं टूटा– साहस नहीं झुका।

फरवरी १९४३ का कोई दिन था– अनशन का वह अड़तालीसवां दिन था। डाक्टर ने मुँह में नली डालकर दूध उड़ेला मगर उसने वापस उगल दिया। हिचकी आई और पंछी उड़ गया।

उस हिचकी के साथ ही इतिहास के पन्नों में एक बलिदानी का नाम और जुड़ गया– 'श्रीदेव सुमन'।

● ब्यावर (राज.)

॥ बाल प्रस्तुति ॥

आओ चिड़िया

कविता

पायल धनगर

आओ चिड़िया प्यारी चिड़िया
तुम्हे देख खुश होती गुड़िया।
चीं चीं चीं करती रहती
गुड़िया तुम्हें देखती रहती।
तुम तो हो आँगन की शोभा
तुमने तो मेरा दिल लोभा,
आओ चिड़िया प्यारी चिड़िया
तुम तो हो धरती की रानी
करती हो अपनी मनमानी
बड़ी सयानी बड़ी सयानी
ठुमक ठुमक कर चलती रहती
फुदक फुदक कर उड़ती रहती।
गुड़िया तुम्हे देखती रहती
साथ-साथ में यह भी कहती,
मैं भी चिड़िया बन जाऊँगी
आसमान में उड़ जाऊँगी।

● इन्दौर (म.प्र.)

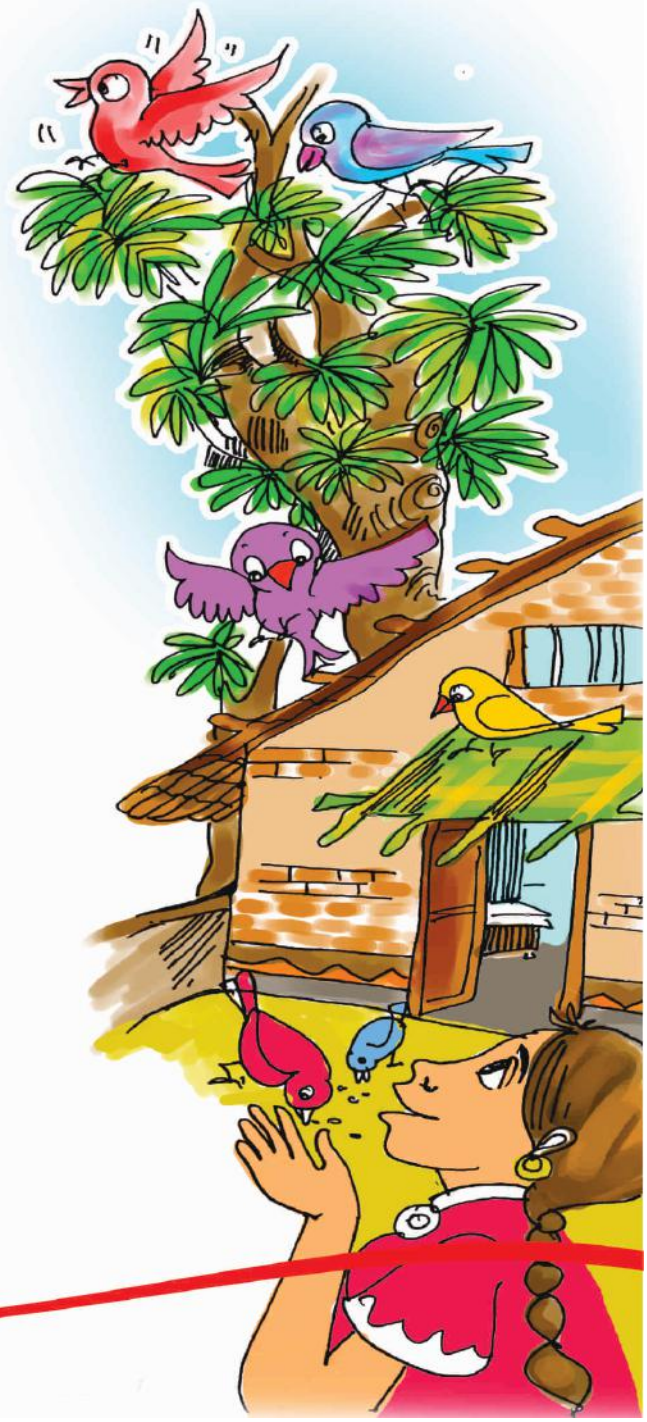

।। प्रसंग ।।

प्रसंग

माँ ने बनाया महान वैज्ञानिक

डॉ. राकेश चक्र

रात्रि में पूरा शहर उजाले से नहा रहा था। मैं अपने कमरे में बल्ब की रोशनी में लिख–पढ़ रहा था। इस रोशनी को बल्ब में किसने भरा। ऐसे सुनाम धन्य आविष्कारक वैज्ञानिक का नाम था थामस अल्वा एडिसन। जिनका जन्म ११ फरवरी, १८४७ को संयुक्त राज्य अमेरिका के मिलान, ओहिओ नगर में हुआ था। उनकी सफलता की कहानी माँ के अटूट विश्वास पर केन्द्रित है। जो विद्यार्थियों के लिए सफलता का मंत्र हो सकती है।

एडिसन की उम्र जब सात वर्ष की थी। वह एक प्राइमरी विद्यालय में पढ़ते थे। वह स्वभाव से चंचल थे। देखने में असामान्य से लगते। माथा अन्य बच्चों की तुलना में काफी चौड़ा था। हल्का सा कम भी सुनते। विद्यालय में बच्चों के साथ मिलकर खूब शोर–शराबा करते। जब यह कक्षा २ में पढ़ रहे थे। तब विद्यालय के क्रोधी स्वभाव के शिक्षक ने शोर शराबा करने वाले ३८ बच्चों को १२ सप्ताह तक एक कमरे में बैठाया। बच्चे खूब शोर मचाते और कक्षा में ही खेलते। एडिसन का असामान्य चेहरा होने के कारण क्रोधी स्वभाव के शिक्षक अपने को असामान्य सा महसूस करते।

एक दिन उस शिक्षक ने कुछ पंक्तियाँ कागज पर लिखकर दीं और एडिसन से कहा यह कागज का पर्चा अपनी माँ को दे देना। एडिसन विद्यालय से घर आये और अपनी माँ को पर्चा देते हुए कहा–''यह शिक्षक ने आपको देने के लिए कहा है।''

माँ ने वह हाथ में लिया और पढ़ने लगी। पढ़ते–पढ़ते उनकी आँखों में आँसू बहने लगे। एडिसन ने माँ से पूछा, ''इसमें क्या लिखा है माँ? यह पढ़कर तुम रो क्यों रही हो?'' आँसू पोंछते हुए माँ ने कहा, ''इसमें लिखा है कि आपका बेटा बहुत होशियार है और हमारा विद्यालय नीचे

स्तर का है। यहाँ अध्यापक भी बहुत शिक्षित नहीं हैं। इसलिए हम इसे नहीं पढ़ा सकते। इसे अब आप स्वयं शिक्षा दें।'' उस दिन के बाद माँ खुद उन्हें पढ़ाने लगीं और माँ के ही मार्गदर्शन में एडिसन पढ़ते रहे, सीखते रहे। कई वर्षों बाद माँ गुजर गई। आपने १०९३ शोध प्रपत्र रजिस्टर्ड कराये, और दो आविष्कार करने में सफल रहे। बल्ब का आविष्कार करने में वह ९९९ प्रयोग करने के बाद ही सफल हुए। उनके मित्र ने पूछा तुमने ९९९ प्रयोग क्यों किये? तब एडिसन ने कहा कि मुझे एक हजारवाँ प्रयोग ही सबसे पहले करना चाहिए था।

उस समय तक एडिसन प्रसिद्ध वैज्ञानिक बन चुके थे और उन्होंने फोनोग्राफ और इलेक्ट्रिक बल्ब जैसे कई महान आविष्कार कर लिए थे। एक दिन फुरसत के क्षणों में वह अपने पुरानी यादगार वस्तुओं को देख रहे थे। तभी उन्होंने अलमारी के एक कोने में एक पुराना खत देखा और उत्सुकतावश उसे खोलकर पढ़ने लगे। यह वही खत था जो बचपन में एडिसन के शिक्षक ने उन्हें दिया था। उन्हें याद था कि कैसे विद्यालय में ही उन्हें अत्याधिक होशियार घोषित कर दिया गया था। मगर पत्र पढ़कर एडिसन अचंभे में पड़ गये। उस पत्र में लिखा था, ''आपका बच्चा बौद्धिक तौर पर काफी कमजोर है। इसलिए अब उसे विद्यालय ना भेजें।'' अचानक एडिसन की आँखों से आँसू झरने लगे। वह घंटों रोते रहे और फिर अपनी डायरी में लिखा, '' एक महान माँ ने बौद्धिक तौर पर काफी कमजोर बच्चे को सदी का महान वैज्ञानिक बना दिया।''

● मुरादाबाद (उ.प्र.)

मेरे दादाजी

● डॉ. शरद नारायण खरे

ज्ञान की बातें रोज बताते,
रोज नया सिखलाते हैं
दादाजी मेरे बड़े अनोखे
मुझको बहुत ही भाते हैं।

वेद-पुराणों की गाथाएं
राम कथा बतलाते हैं
पाप-अधर्म पराजित होता
यही हमें सिखलाते हैं।
अंग्रेजों से लड़े थे कैसे
किस्से रोज सुनाते हैं
'वन्दे मातरम्' कहने में वे
भाव विह्वल हो जाते हैं।

मन की ताकत सबसे बेहतर
यही सार बिखराते हैं
अनुशासन सूरज के जैसा
यही सत्य बतलाते हैं।

दादाजी सबसे बड़े गुरु हैं
मेरा ज्ञान बढ़ाते हैं
शाम सैर पर ले जाते हैं
मुझ पर प्यार लुटाते हैं।

● मंडला (म.प्र.)

।। शिशु गीत ।।

प्यारे दादाजी

● अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे'

घड़ी देखकर छड़ी उठाकर
चले टहलने दादाजी
बागीचे में हँसे ठठाकर
लगे उछलने दादाजी।

है विचार ऊँचा उनका पर
जीवन सीधा सादा जी
बिल्कुल ही भोले भाले हैं
मेरे प्यारे दादाजी।

● सागर पाली (उ.प्र.)

कल्पना अनेक : दादाजी

हरफनमौला दादाजी

• वीरेन्द्र जैन

मूछों वाले दादा जी
लाठी वाले दादा जी।

अक्खाड़े में दण्ड पेलते
कसरत वाले दादा जी।

हैं प्रसन्न ही रहते, वो
मुस्काते हैं दादा जी!

बच्चों के मन भाते हैं
टॉफी वाले दादा जी!

मीठे के शौकीन बड़े
रबड़ी खाते दादा जी !

मन से सीधे सच्चे हैं
मन से भोले दादा जी!

दुखीजनों की सेवा करते
हैं उदारमन दादा जी!

कुश्ती लड़ते दाव सिखाते
सब कुछ जाने दादाजी!

• मन्दसौर (म.प्र.)

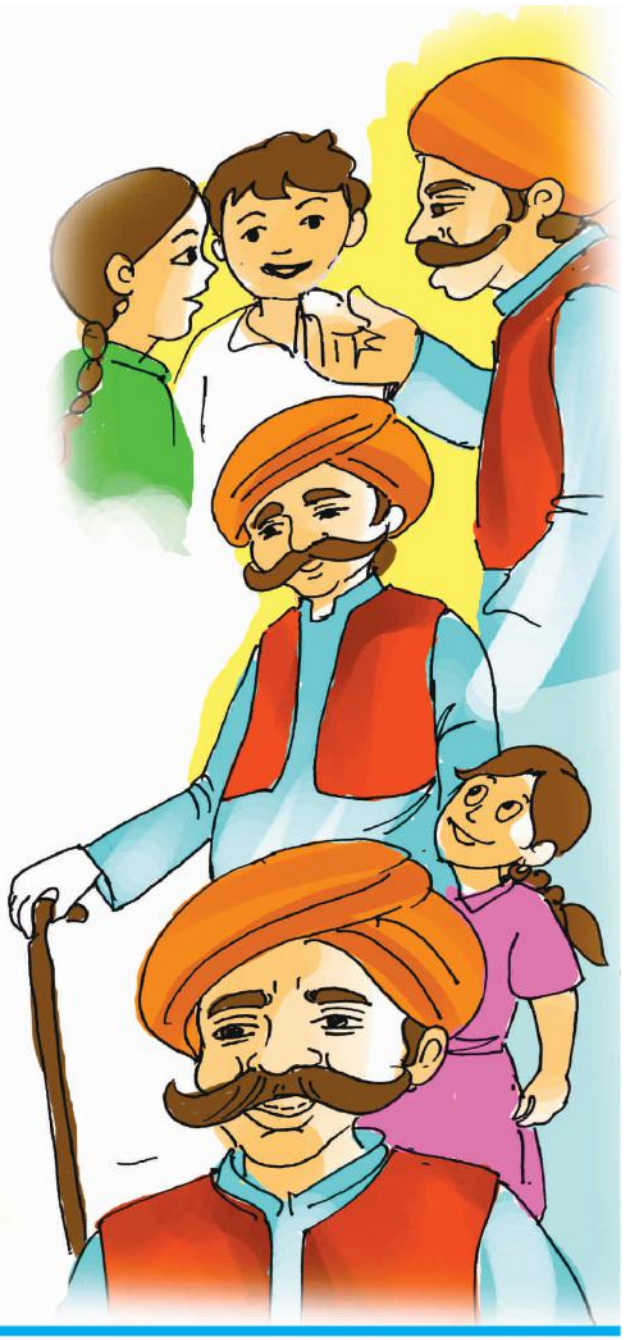

आपकी कविता

बच्चो! ऊपर के दो श्रेष्ठ रचनाकारों की कविताएँ पढ़कर नीचे दिए खाली स्थान पर आपको 'दादाजी' विषय पर ही अपनी कल्पना को पंख लगाकर एक प्यारी सी कविता लिखना है।

.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....

.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....

बड़े लोगों के हास्य प्रसंग
तुम सही कह रही हो वह सही है

● नितेश नागोता

अल्बर्ट आइन्स्टीन इस युग के सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक थे। उनकी पत्नी बहुत ही क्रोधी थी। जबकि आइन्स्टीन बहुत ही शान्त प्रकृति के धनी थे। एक दिन आइन्सटीन की पत्नी ने कहा– मैंने सुना है कि तुमने बहुत खोज की है। बड़े–बड़े आविष्कार किए हैं। नित नये आविष्कार में लगे हुए हैं। तो कम से कम एक नौकर की खोज हमारे लिए भी करो जो मेरा काम सहर्ष कर सके।

आइन्स्टीन ने कहा– नौकर खोजने की कोई आवश्यकता नहीं? तुम्हारे पास जो नौकर है, उसी से काम लिया करो।

आइन्स्टीन की पत्नी ने कहा– जो वर्तमान में नौकर है, वह नौकर एक दम आलसी है। अत्याधिक झूठ बोलता है। वह मेरी आज्ञा का पालन नहीं करता।

आइन्स्टीन ने कहा– तुम्हारा कहना सत्य है। वास्तव में वह ऐसा ही है।

नौकर सारी बातें दरवाजे के पीछे छिपकर सुन रहा था। ज्योंही आइन्स्टीन की पत्नी वहाँ से गई। नौकर आइन्स्टीन के पास पहुँचा और कहा –सर! मालकिन का स्वभाव अत्यधिक तेज–तर्रार है। मैं रात–दिन उनका कार्य करता हूँ। पर कभी भी मालकिन के मुँह से धन्यवाद नहीं निकलता। वह दिन भर मुँह चढ़ाये रहती हैं। एक क्षण भी शांति से बैठने नहीं देतीं। सारे दिन कच–कच किया करती है।

आइन्स्टीन ने कहा– तुम जो कह रहे हो वह बिल्कुल सही है।

पत्नी ने नौकर की बात सुन ली। सुनते ही उसे अत्यधिक क्रोध आ गया। वह बोली– मेरा पति कितना मूर्ख है। लोग उसे महान वैज्ञानिक कहते हैं जबकि यह जानता कुछ नहीं है? जब मैंने शिकायत की तो कह दिया– तुम जो कह रही हो वह ठीक है। मेरे विरुद्ध नौकर ने शिकायत की तो उसे भी कह दिया की तुम जो कहते हो वह सही है। आवेश में वह आइन्स्टीन के पास पहुँची

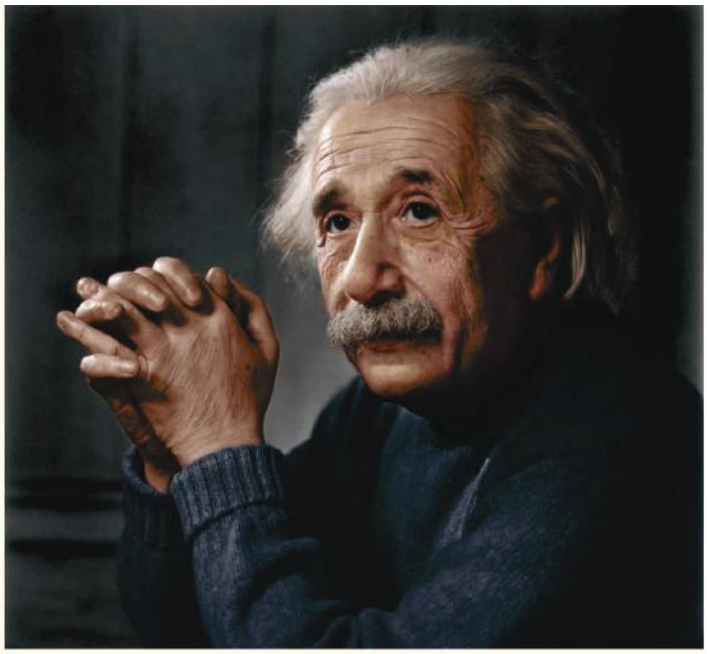

और बोली कि– तुमने यह क्या मूर्खता की?

आइन्स्टीन ने कहा–तुम जो कह रही हो वह भी सही है। नौकर ने जो कहा वह भी सही है। ओर जो मैं कह रहा हूँ वह भी सही है। सभी के मुँह हँसी के फव्वारे फूट पड़े।

● भवानीमंडी (राज.)

सही उत्तर -उलझ गए : सोहन कुंदन का रिश्ते में फुफेरा भाई है।
संस्कृति प्रश्नमाला : मृत, सुभद्रा व श्रीकृष्ण, ईरान, डाकिनी नदी के किनारे, महाराज पृथु, छत्रपति शिवाजी, रहस्यज्ञ अधिकारी, इग्लैण्ड, वीरवर गोटा।

गृहकार्य की समस्या

चित्रकथा : देवांशु वत्स

गर्म मूँगफली

कविता

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

गर्मागर्म मूँगफली खाने में,
अच्छा लगता है स्वाद।
जाड़े में रोज मूँगफली लाना,
बापू को रहता है याद ।।

बच्चे बड़े सभी को सर्दी में,
खाने में मूँगफली है भाती।
चटनी संग मूँगफली मिले तो,
सबके मन को है ललचाती।।

जाड़े में शाम समय,
मूँगफली रोज हम खाते।
हर चौराहे पर ठेलों पर,
मूँगफली बिकते हम पाते।।

प्रोटीन व मिनरल का,
मूँगफली होता है खजाना।
कितना हो हम चट कर जाते,
अच्छा लगता है खाना।।

भुनी हुई हो मूँगफली,
सोंधी होती है महक।
ज्यादा मात्रा में मूँगफली,
खाने में हम जाय बहक।।

गर्म रहे जब मूँगफली,
जाड़े में बिक्री बढ़ जाती।
धनिया पत्ती की चटनी हो,
मूँगफली बहुत सुहाती।।

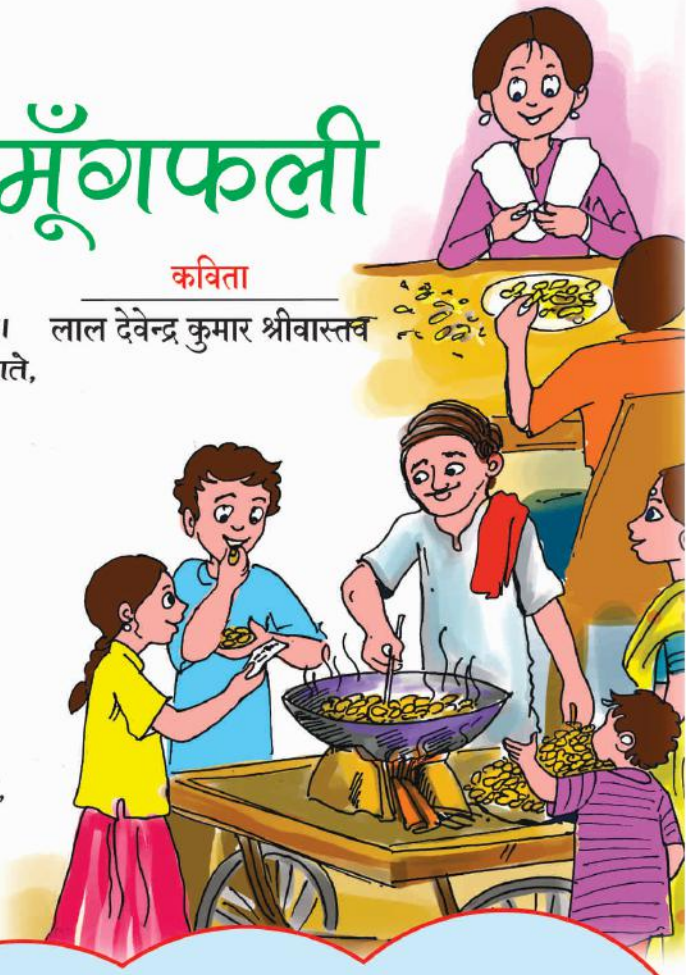

आपकी पाती

जनवरी २०२० का अंक अपनी स्थापित परम्परा के अनुकूल है। देवपुत्र में गुणवत्ता की विशेष महत्ता जस की तस है। राष्ट्रीय पर्व की प्रासंगिकता के मंच पर तिरंगा मुखपपृष्ठ एक झलक में ही अभिभूत करने में टंच है। मातृशक्ति के प्रति डी कृष्णकुमार की भक्ति इस कलियुग में सतयुग का प्रेरक उदाहरण है। ऐसे आधुनिक श्रवण कुमार होनहार बिरवान को संस्कारवान बनने का संदेश देते हैं। हजारों तीर्थ की यह पुण्याई वह कमाई है जो दौलत की बदौलत भी प्राप्त नहीं हो सकती है। सामग्री के चयन में आपकी पारखी दृष्टि अविराम तथा अभिराम है। संपादकीय टीम प्रशंसनीय है। बधाई सहित हार्दिक शुभकामना है।

● **राजा चौरसिया, कटनी (म.प्र.)**

देवपुत्र का जानवरी २०२० का अंक हमने बड़े चाव से पढ़ा। कहानियाँ खूब पसंद आई। कविताएँ मन को गुदगुदा गई और लेख चित्रकथाएँ अपार प्यार दे गई। पत्रिका को घर में सभी पसंद करते हैं। इस पत्रिका की मैं तारीफ करूँ या न करूँ यह पत्रिका अपने आप में बेमिसाल है और हर पाठक का दिल जीत लेती है। विषय एक कल्पना अनेक खूब पसंद आ रहा है।

● **बद्रीप्रसाद वर्मा 'अनजान', गोरखपुर (उ.प्र.)**

एकल द्वीपों के स्वतंत्र देश

आलेख

श्रीधर बर्वे

कुछ ही देश हैं जो एक ही द्वीप में बसे हुए हैं। एक ही द्वीप से तात्पर्य है एक बड़ा तथा उसके आसपास स्थित छोटे–छोटे द्वीपों का एक ही देश।

१. ऐसे देशों में हमारे सबसे निकट का पड़ोसी देश है **श्रीलंका**। हिन्द महासागर का रत्न कहलाने वाला यह द्वीप देश ४ फरवरी १९४८ को स्वतंत्र होने के पूर्व हमारे देश की ही भाँति अंग्रेजों का उपनिवेश था। ६५६१० वर्ग किलोमीटर और लगभग दो करोड़ की जनसंख्या इस देश की है। राजधानी कोलम्बो है। हमारे दक्षिणी पड़ोसी द्वीप देश से ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध बहुत गहरे हैं।

२. एकल द्वीप का अन्य देश है **मेदागास्कर**। यह द्वीप देश दक्षिणी हिन्द महासागर में अफ्रीका के दक्षिण पूर्व में स्थित है। यह विश्व का चौथा बड़ा द्वीप है। ५८७३४१ वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल तथा लगभग दो करोड़ जनसंख्या है। वर्ग १५०० में पुर्तगालियों ने इस द्वीप की खोज की, १८९६ में फ्रांसीसियों ने इसे अपना उपनिवेश बनाया तथा २६ जून १९६० को स्वतंत्र देश के रूप में उभरा।

इस द्वीप का वनस्पति तथा प्राणी जगत भिन्नता लिए हुए विशेष प्रकार का है। इसलिए इसे कभी कभी सातवां महाद्वीप भी कहते हैं। सुन्दर गुलमोहर वृक्ष का मूल स्थान यही द्वीप है। अन्ताना नारिवो इस देश की राजधानी है।

३. ब्रिटेन – एकल द्वीप का महत्वपूर्ण देश है **ब्रिटेन**। ब्रिटेन के तीन राजनीतिक एवं भाषायीक खण्ड हैं– इंग्लैण्ड, स्कॉटलैण्ड और वेल्स। तीनों का संयुक्त नाम ब्रिटेन है। ब्रिटेन के साथ उतरी आयरलैण्ड का संयुक्त नाम है– युनाइटेड किंगडम। राजनीतिक प्रभाव के कारण ब्रिटेन को ग्रेट ब्रिटेन भी कहा जाता है। कभी (पिछली शताब्दी के मध्य तक) ब्रिटेन सबसे बड़ा साम्राज्यवादी देश हुआ करता था।

ब्रिटेन का क्षेत्रफल २४४१८० वर्ग किलोमीटर तथा जनसंख्या लगभग सवा छह करोड़ है। राजधानी लंदन है।

४. **आइसलैण्ड** : योरोप के पश्चिमोत्तर में आइसलैण्ड द्वीप राज्य स्थित है। आइसलैण्ड के निवासी नार्वे के दुस्साहासी वाइकिंग लोगों के वंशज हैं। पहले यह स्वतंत्र देश था किन्तु १३वीं शताब्दी में नार्वे में अधिकार कर अपने साम्राज्य में मिला लिया। नार्वे के बाद डेन मार्क ने इस देश पर कब्जा कर लिया था। १९४१ में डेनमार्क से मुक्त होकर १७ जून १९४४ को गणराज्य की घोषणा हुई। आइसलैण्ड के भूभाग का केवल एक प्रतिशत ही कृषि योग्य है। इसका क्षेत्रफल १०२८४६ वर्ग किलोमीटर तथा आबादी लगभग सवा तीन लाख है राजधानी रिक्याविक है।

५. **क्यूबा** : कैरीबियन सागर में स्थित द्वीप क्यूबा की अनेक विशेषताएँ हैं। इसे चीनी का भण्डार और कैरीबियन सागर का मोती भी कहा जाता है। १४९२ में कोलम्बस द्वारा खोजे जाने के बाद यहाँ चार शताब्दियों

तक स्पैन का राज्य (अधीन) बना रहा। २० मई १९०२ को क्यूबा ने स्वतंत्रता प्राप्त की। 'क्यूबा देश' में ''आइल ऑव यूथ तथा अन्य छोटे छोटे द्वीप भी सम्मिलित हैं। यह एक साम्यवादी राज्य व्यवस्था का देश है।

क्षेत्रफल ११०९२२ वर्ग किलोमीटर तथा जनसंख्या लगभग सवा करोड़ है। राजधानी हवाना है।

६.**जमैका :** वेस्ट इण्डीज के उल्लेखनीय द्वीपों में जमैका एक मझौले आकार का स्वतंत्र द्वीप देश है। कोलम्बस ने १४९४ में इस द्वीप पर कदम रखे थे, उसके बाद से १६५५ तक स्पेन तथा बाद में ब्रिटेन के अधिपत्य में रहा। जमैका के ९० प्रतिशत से अधिक निवासी अफ्रीका से लाए गये दासों के वंशज हैं। वहाँ की जनसंख्या में एक प्रतिशत वे भी हैं जिनके पूर्वज गिरमिटिया श्रमिकों के रूप में भारत से ले जाये गए थे। अपनी प्राकृतिक सुन्दरता के कारण पर्यटन का बड़ा केन्द्र है। ६ अगस्त १९६२ को यह देश स्वतंत्र हुआ। इसका क्षेत्रफल ११४२५ वर्ग किलोमीटर। जनसंख्या लगभग २८ लाख और राजधानी किंग्सटन है।

● **इन्दौर (म.प्र.)**

चिंपू बन्दर का चित्र पूरा कर रंग भरो।

● चाँद मोहम्मद घोसी

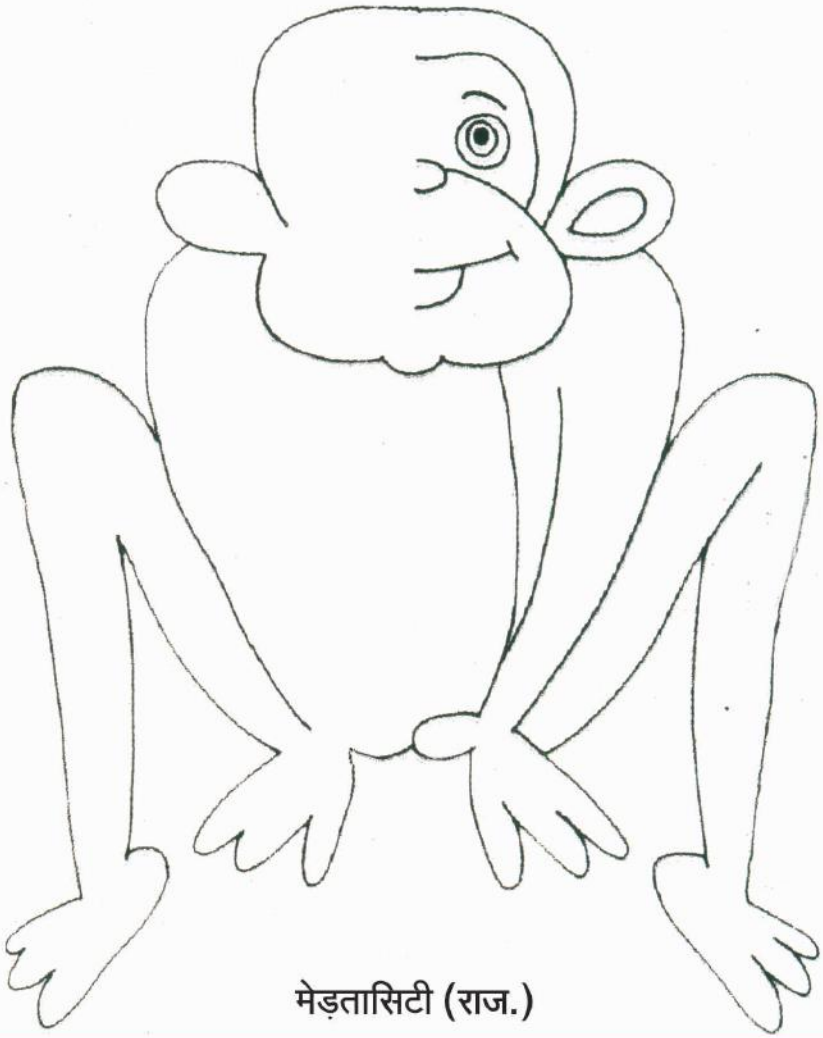

मेड़तासिटी (राज.)

महंगी पड़ी मनमानी

कविता

भूपिन्दर सिंह आशट

गधा बन गया पोस्टमेन,
मिली नौकरी आया चैन।
थोड़ा उसमें घमंड भी आया,
नौकरी न संभाल पाया।
समय पर न डाक बांटता,
पूछे कोई पत्र तो उसे डाँटता।
कहता सबर भी रखो भाई,
सिफारिश से नौकरी लगवाई।
अच्छे मैंने दिये हैं दाम,
मर्जी से ही करूँगा काम।
सुन कर सबको गुस्सा आया,
मारा गधे को खूब भगाया।
गई नौकरी की नादानी,
महंगी पड़ी उसे मनमानी।

● घग्गा (पंजाब)

विज्ञान और धर्म

प्रसंग

शिवकुमार गोयल

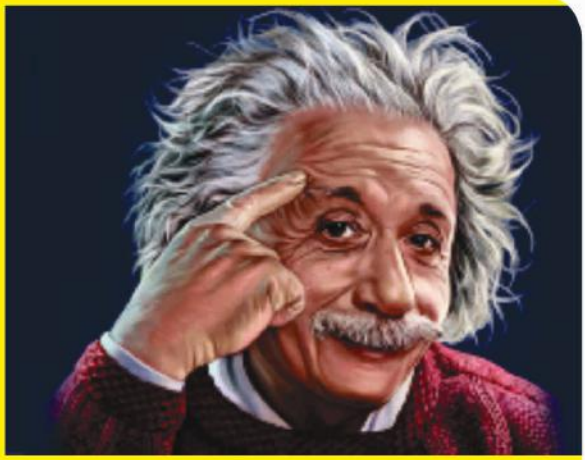

महान वैज्ञानिक अलबर्ट आइंस्टीन विज्ञान की अपेक्षा ईश्वर को कहीं अधिक महत्वपूर्ण मानते थे।

एक दिन ब्रिटेन के कुछ वैज्ञानिक उनसे भेंट करने आए। एक वैज्ञानिक ने अपनी डायरी आगे कर संदेश लिखने की प्रार्थना की। आइंस्टीन ने लिखा– ''अकेले ज्ञान–विज्ञान के माध्यम से मानव का कल्याण संभव नहीं है। उच्च नैतिक मानदण्ड ही मानवता को जीवित रख सकते हैं। यह मेरे वैज्ञानिक जीवन का निष्कर्ष है।''

सन् १९५५ में प्रिंसटन अस्पताल में वे मृत्यु शैया पर थे। डॉक्टरों ने उनके ऑपरेशन का सुझाव दिया तो उन्होंने ऑपरेशन कराने से इंकार करते हुए कहा– ''मैंने अपने तमाम कार्य पूरे कर लिए हैं। अब मैं बनावटी तरीके से जिन्दगी ढोने को तैयार नहीं हूँ।''

उन्होंने मृत्यु से कुछ समय पूर्व अपने एक मित्र से कहा– संसार आधुनिकतम शस्त्रास्त्रों के कारण विनाश के कगार पर बैठा है। उसे धर्म और मानवता की भावना ही बचा सकती है।''

● पिलखुआ (उ.प्र.)

आँखे खुल गयी

कहानी

डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

बीजों का प्रकीर्णन हुआ–वायु के द्वारा, जानवरों के द्वारा और मनुष्यों के द्वारा। ये बीज जहाँ–तहाँ बिखर गए। कुछ बीज गाँव की चौपाल में भी बिखरे। सुप्तावस्था में पड़े बीजों ने आवश्यक परिस्थितियाँ पायीं और अंकुरित होने लग गए। उनसे मूलांकुर निकल आए तो सीधे जमीन में जा पहुँचे।

प्रांकुर जमीन से बाहर ऊपर आए। अब बीज–पत्र टूटकर जमीन में मिल चुके थे। जड़ों ने भूमि से खाद्य–सामग्री ग्रहण करनी प्रारंभ कर दी थी। प्रांकुर भी बड़े होने लगे थे जिन पर कोमल हरी–हरी पत्तियाँ साफ–साफ दिखाई दे रही थीं। बच्चे तो इन पौधों को देखकर हर्षित हो ही रहे थे, ग्रामीण पुरुष व महिलाओं की प्रसन्नता का भी कोई ठिकाना न था। सभी मन ही मन सोच रहे थे कि आगे से हम चौपाल में पेड़ों की ठंडी–ठंडी छाँव में विश्राम किया करेंगे।

पर, यह क्या? सायंकालीन वेला में बकरियों का एक झुंड उधर से होकर गुजरा। बकरियों ने उन नन्हें–नन्हें पौधों को अपना ग्रास बना लिया। सौभाग्य से एक पौधा बच गया। सुबह बच्चों ने देखा तो वे बहुत चिंतित हुए। ''चलो, एक पौधा तो बच गया है। हम इसके चारों और कंटीले तार लगाकर इसकी रखवाली करेंगे और पाल–पोसकर इसे बड़ा करेंगे।'' बच्चों ने निर्णय लिया।

अगले दिन से बच्चों ने पौधे की रखवाली शुरू कर दी। धीरे–धीरे पौधा एक बड़े पेड़ में परिवर्तित होने लगा। देखते ही देखते उसने विशालकाय पेड़ का रूप धारण कर लिया। बच्चों की लगन व मेहनत रंग ला चुकी थी। समस्त ग्रामवासियों ने बच्चों के इस नेक कार्य की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

फिर, क्या था। दोपहर में चौपाल के उस पेड़ के नीचे वृद्ध विश्राम करते, महिलाएँ घर के कामों से निवृत्त होकर मनोरंजन करतीं और बच्चे कोई मनचाहा खेल खेलते। पेड़ उन सबको निहारकर अत्यंत प्रफुल्लित होता। वह लंबी चौड़ी शाखाओं को हवा में हिला–हिलाकर अपनी आत्मीयता व प्रेम का प्रदर्शन करता। सच, मानो गाँव की चौपाल में रौनक आ गयी थी। उस पीपल के पेड़ से। सरपंच तथा गाँव के पंच के महत्वपूर्ण फैसले उसी पेड़ के नीचे बैठकर लिया करते थे।

तभी एक रात गाँव में चोरी हो गयी। रात्रि के बारह बजे का समय था। मजदूर हरिया अपने दो अन्य साथियों के सहित उसी उक्त गाँव में प्रविष्ट हुआ। पूरे गाँव में चोर–चोर का शोर सुनकर हरिया व उसके साथी भयभीत हो गए। ग्रामीणों ने उन निर्दोषों को ही चोर समझ कर पकड़ लिया तथा बंधक बना लिया। दिन निकलते ही तीनों को गाँव की चौपाल में पेड़ के नीच पेश किया गया। तीनों के मुँह लटके हुए थे। सरपंच जयसिंह अपने पंच साथियों सहित हुक्का गुड़गुड़ाते हुए प्रसन्न मुद्रा में न्याय करने की अवस्था में वहाँ विराजमान हो गए। हरिया से पूछा गया चोरी की है।

'नहीं' हरिया व उसके साथी बोले।

एक पंच बोला– ''इसको कोड़े लगाओ, तब बताएगा। यह!'' दूसरा पंच बोला– ''इसके हाथ–पाँव बाँध कर पेड़ से लटका दो।''

''इसको गाँव से निकाल दीजिए।'' तीसरे पंच का तर्क था।

हरिया व उसके साथियों ने चोरी तो की नही थी अतः कैसे स्वीकार करते। काफी विचार–विमर्श के बाद हरिया को गाँव से निकालने पर सहमति बन गयी। हरिया के अलावा उसके दोनों साथियों को भी ऐसी ही सजा सुनाई गई।

मरता, क्या न करता। हरिया अपने साथियों को लेकर दूसरे गाँव में जाकर मेहनत मजदूरी से पेट भरने लगा। ग्रामीणों ने चैन की सांस ली।

इधर फैसला सुनते ही पीपल के पेड़ के नयनों में

आंसू की धारा फूट पड़ी। उसने मन ही मन ऐसे स्थल पर न रहने का विचार किया। जहाँ निर्दोषों को सजा दी जाती है। वह धीरे–धीरे सूखता चला गया। महीने भर में पेड़ सूखकर गिर पड़ा। उसने अपना अस्तित्व समाप्त कर दिया। ग्रामीणों ने देखा तो घबरा गए। सोचने लगे कि गाँव पर कोई विपदा आने वाली है। किन्तु, क्या हो सकता था अब भला?

संयोगवश एक संत पड़ोस के गाँव से आ रहे थे। ग्रामीणों ने उन्हें चौपाल पर आमंत्रित किया। कुछ ही देर पश्चात् संत के समक्ष पूरी घटना रखी गई। संत मुस्काए और बोले– ''पेड़–पौधे भी हमारी तरह ही सांस लेते हैं, अनुभव करते हैं, दुख–सुख का तथा जीवन संबंधी अन्य प्रक्रियाएँ भी करते हैं। पेड़ को यह अन्याय सहन नहीं हुआ। हरिया और उसके साथियों की भाँति वह भी पलायन कर गया यहाँ से।''

''हम क्या करें अब?'' सरपंच व पंचों ने आश्चर्य–चकित होकर प्रश्न किया।

''प्रायश्चित!'' संत का जवाब था। आगे उन्होंने कहा–

''ठीक है।'' सभी ने हामी भरी।

''लेकिन गाँव की चौपाल पर मत लगाना, यहाँ अब कोई पेड़ नहीं उगेगा– पेड़ ने श्राप जो दिया है।'' संत ने सफाई दी।

गाँव वालों की आँखें खुल गयी थी। अगले कार्यदिवस में विद्यालय के चारों ओर भारी संख्या के पौधारोपण का कार्य प्रारम्भ हो गया था। दुःख है, चौपाल का वह पेड़ आज भी ग्रामीणों की स्मृतियों का ही एक हिस्सा है।

● **गुरुग्राम (हरियाणा)**

जंगल में महाशिवरात्री

कहानी

किसलय हर्ष

सुबह-सुबह बैजूवन में बहुत हलचल थी। महाशिवरात्रि आने वाली थी। इसी उपलक्ष्य में पिनाकी शेर ने सभा बुलाई थी। महाशिवरात्रि सभी जानवरों का प्रिय त्यौहार था। सभी जानवर कई महीनों से इस त्यौहार की प्रतीक्षा कर रहे थे।

निर्धारित समय पर सभी जानवर सभा में पहुँच गए। सभी जानवरों को संबोधित करते हुए पिनाकी शेर ने कहा ''हम सभी जानवरों के लिए पशुपतिनाथ शिवजी का विशेष महत्व है। महाशिवरात्रि आने वाली है, इसलिए अब हम सभी को शिव पूजा और शिव बारात के लिए तैयारी शुरू कर देनी चाहिए।''

पिनाकी शेर की बातें सुनकर सभी जानवर बहुत खुश हुए। अप्पू हाथी ने कहा ''इस बार शिव बरात में वह रावण बनेगा और शिव धुन पर ठुमक-ठुमक कर नाचेगा।'' गटरू सियार ने कहा कि ''वह नारद बनकर शिव बरात में नारायण नारायण करेगा।'' सभी जानवरों ने कुछ न कुछ बनने की बात कही। सभी शिव बरात में भाग लेने के लिए अति उत्साहित थे। शिव बारात आयोजन समिति का अध्यक्ष सर्वसम्मति से अप्पू हाथी को बनाया गया।

अप्पू हाथी ने दूसरे दिन बैजूवन में नदी के किनारे स्थित शिवलिंग के आसपास साफ-सफाई आरंभ करवा दी। शिव बारात के दिन सभी जानवरों को पिनाकी शेर की गुफा से निकालकर इसी नदी के किनारे स्थित शिवलिंग तक नाचते-गाते हुए आना था। सभी छोटे-बड़े जानवर इसमें अपना सहयोग दे रहे थे।

तभी मटरू वानर के मन में एक दूषित योजना आई। उसने सोचा क्यों न इस बार महाशिवरात्रि के समय जंगल के दोनों ताकतवर जानवर पिनाकी शेर और अप्पू हाथी को आपस में लड़ा दिया जाए। यह सोचकर वह मन ही मन बहुत प्रसन्न हुआ और पिनाकी शेर से मिलने के लिए उसकी गुफा की तरफ गया। उसने वहाँ जाकर पिनाकी शेर को दंडवत प्रणाम किया और कहा, ''महाराज, आपने तो बड़े प्रेम से सभी जानवरों के साथ मिलकर अप्पू हाथी को शिव बारात आयोजन समिति का अध्यक्ष बना दिया। परंतु आपके प्रेमपूर्ण व्यवहार से तो वह बौरा गया है। अब वह भी अपने आप को जंगल का राजा बता रहा है।''

मटरु वानर की बातें सुनकर पिनाकी शेर बौखला गया। वह गुफा से बाहर निकलकर दहाड़ने लगा। उसकी दहाड़ से बैजूवन में हड़कंप मच गया। पिनाकी शेर गर्जन

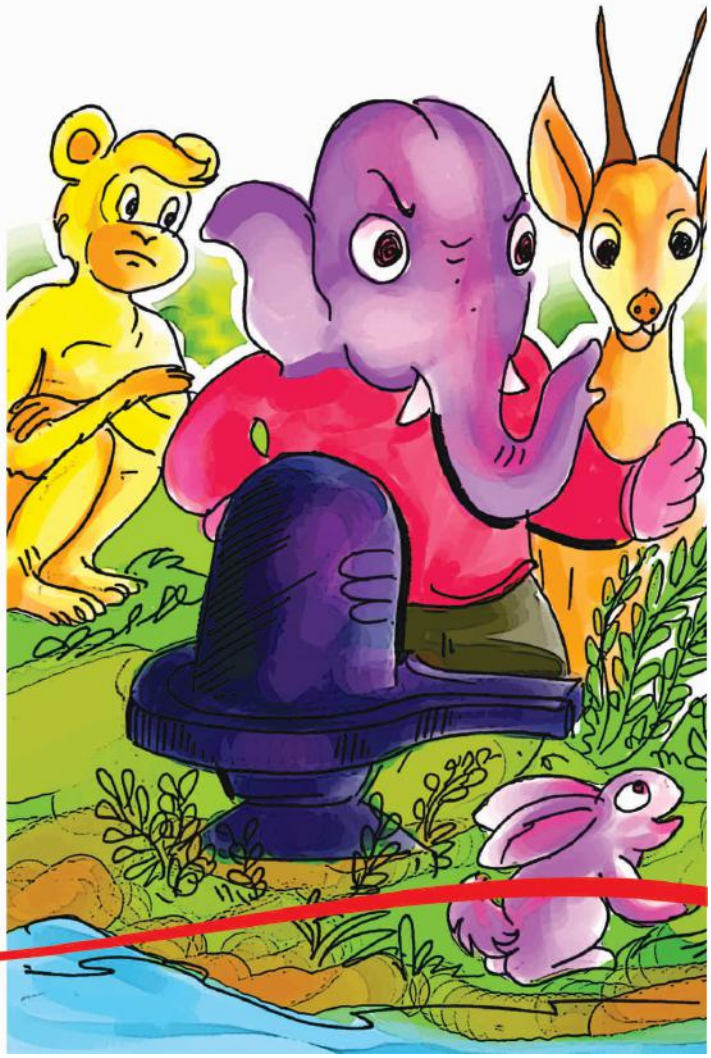

करते हुए नदी के किनारे स्थित शिवलिंग के पास गया। वहाँ पहले से बहुत से जानवरों के साथ अप्पू हाथी भी मौजूद था। पिनाकी शेर ने आव देखा न ताव और सीधे अप्पू हाथी पर टूट पड़ा। उसके अचानक आक्रमण से अप्पू हाथी को क्रोध आ गया और उसने अपनी सूंड में लपेटकर पिनाकी शेर को बहुत दूर उछाल दिया। दोनों में आपस में इस तरह से बहुत देर तक लड़ाई होती रही। अंत में बिना किसी परिणाम के लड़ाई समाप्त हो गई। लड़ाई में दोनों ही बुरी तरह से घायल हो गए थे।

उनको इस तरह से लड़ते हुए देखकर सभी जानवरों को बड़ी चिंता हुई। सभी दुःखी थे, लेकिन मटरु वानर की खुशी छिपाये नहीं छिप रही थी। वह मन ही मन खुश था और मुस्कुरा रहा था। अपनी खुशी को छिपाने के लिए वह नदी से हटकर कुछ दूर चला गया ताकि कोई भी उसकी आतंरिक प्रसन्नता को ना देख सके। कच्चू बन्दर को तब मटरु वानर पर कुछ संदेह हुआ। पूरी बात जानने के लिए वह पिनाकी शेर के पास गया और अप्पू हाथी से उसके झगड़े का कारण पूछा।

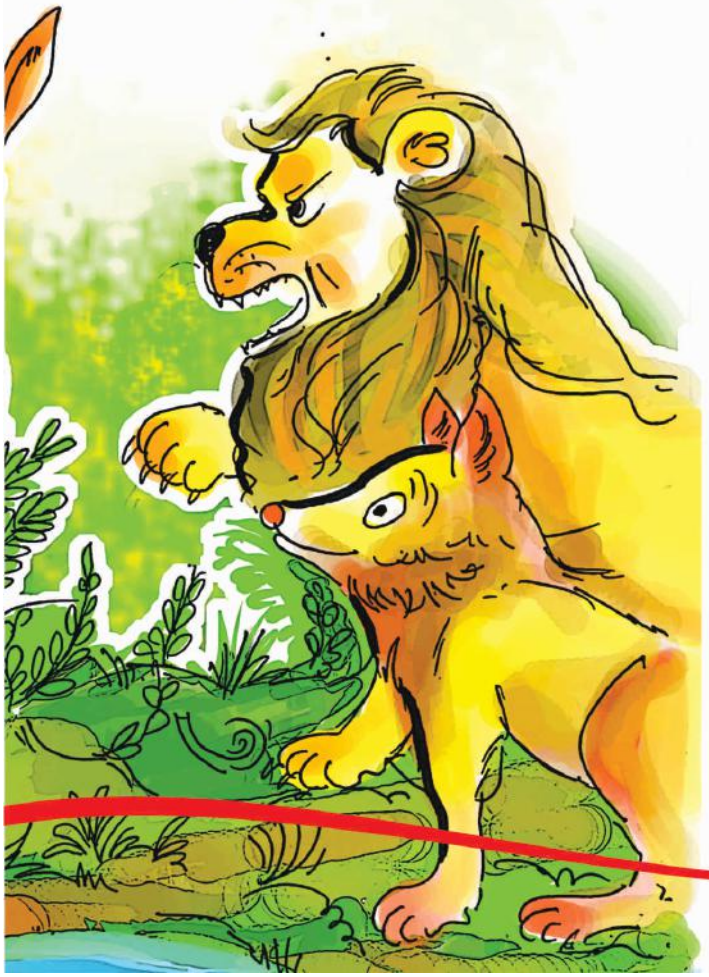

पिनाकी शेर ने उसे सारी बातें विस्तार से बताई। पिनाकी शेर से पूरी बातें सुनने के बाद उसे सब कुछ समझ में आ गया। उसने कहा कि अप्पू हाथी तो पूरे मनोयोग से शिव बारात की तैयारी कर रहा है। उसने ना कभी अपने आप को जंगल का राजा कहा है और ना ही राजा की तरह आचरण ही किया है। यह सब तो मटरु वानर की कोई दुष्ट योजना लगती है।

कच्चू बन्दर की बातें सुनकर पिनाकी शेर को अपनी गलती का आभास हुआ। उसे पता चल गया कि जोश में आकर उससे बड़ी गलती हो गई। उसने तुरंत अप्पू हाथी के पास जाकर क्षमा माँग ली। अप्पू हाथी ने उसे क्षमा कर दिया और कहा कि हमें दूसरों की बातों में आकर तुरंत ही कोई भी निर्णय नहीं लेना चाहिए। इसके बाद दोनों मटरु वानर को खोजने लगे। थोड़ी दूर जाने पर उन्हें मटरू वानर दिखाई दिया। दोनों ने तब पीट-पीटकर उसे बैजूवन से बाहर निकाल दिया।

अब पुनः सभी जानवर मिलकर महाशिवरात्रि की तैयारी में लग गए। कुछ दिनों के बाद महाशिवरात्रि का त्यौहार आ गया। सभी जानवरों ने सुबह उठकर शिवलिंग पर जलाभिषेक कर भगवान शिव की पूजा की। शाम के समय सभी ने फिर पिनाकी शेर की गुफा से भव्य शिव वर यात्रा निकाली। शिव वर यात्रा में सभी छोटे-बड़े जानवर नाचते गाते पूरी जंगल की सैर करते हुए आधी रात में नदी के किनारे स्थित शिवलिंग पहुंचे। शिवलिंग के पास पहुंचकर सभी ने रातभर भगवान शिव का भजन कीर्तन गाया। पिनाकी शेर, अप्पू हाथी, कच्चू बन्दर और सभी ने खूब ठुमके भी लगाए। अगली सुबह फिर सब ने भगवान शिव की श्रद्धापूर्वक पूजा की। सभी ने भगवान से प्रार्थना की कि जंगल में बस इसी तरह मिल-जुलकर खुशी-खुशी रहेंगे और हमेशा इसी तरह महाशिवरात्रि का त्यौहार मनाते रहेंगे।

● **देवघर (झारखण्ड)**

प्रकृति के पक्ष में

कहानी

मोनिका जैन 'पंछी'

अस्तित्व के पिताजी उसके लिए रेशम का एक कुर्ता लाए थे। अस्तित्व को वह इतना पसंद आया कि जब भी वह कभी बाहर जाता सप्ताह में कम से कम एक बार उसे अवश्य पहनता। एक रविवार वह गृहकार्य करने के लिए अपनी एक दोस्त अपूर्वा के घर गया हुआ था। वहाँ कुछ और भी सहपाठी थे। कक्षा में उन्हें वस्त्रों की पहचान के लिए घर पर एक प्रयोग करने को कहा गया था। उन्हें सूती, रेशम, ऊनी और संश्लिष्ट धागों की पहचान उन्हें जलाकर उनसे निकलने वाली गंध के माध्यम से करनी थी।

अपूर्वा ने अपनी माँ रश्मि से इन सभी धागे देने के लिए कहा। रश्मि मौसी ने सूती, ऊनी और संश्लिष्ट कपड़ों के धागे तो दे दिए, लेकिन उनके पास रेशम का कोई भी वस्त्र नहीं था। सालों से वे रेशम का कोई कपड़ा खरीदकर नहीं लायी थीं। तभी अश्विन की दृष्टि अस्तित्व के कुर्ते पर पड़ी। उसने विनोद में अस्तित्व को चिढ़ाते हुए कहा, ''आज तो तुझे अपनी प्रिय कुर्ते की बलि देनी होगी।''

अस्तित्व थोड़ा झिझक गया। तब रश्मि मौसी ने अश्विन को चुप किया और अस्तित्व के कुर्ते को पलटकर सिलाई वाली जगह से निकले धागे उसे दिखाए। वह मुस्कुराने लगा और रश्मि काकी की मदद से उसने कैंची से एक धागा काटकर निकाल लिया। रश्मि काकी एक मोमबत्ती जलाकर ले आई।

उसके बाद बच्चे उनकी निगरानी में सभी धागों को बारी-बारी से जलाकर उनकी गंध सूंघने लगे।

सूती कपड़े को जलाते ही अंकिता ने कहा, ''अरे यह तो कागज के जलने जैसी गंध है।''

बाकी मित्रों ने भी अंकिता का समर्थन किया। ऊनीं धागे को जलाने पर जलते बालों जैसी गंध और संश्लिष्ट धागे को जलाने पर प्लास्टिक जैसी गंध को भी उन्होंने पहचान लिया। रेशम के धागे को जलाने पर आने वाली गंध उन्हें जलते माँस जैसी गंध लगी।

अपूर्वा ने अपनी माँ से पूछा, ''माँ, हम कभी रेशम के कपड़े क्यों नहीं लाते? कितने सुन्दर लगते हैं।''

रश्मि मौसी ने कहा, ''बेटा, वास्तव में रेशम का यह धागा हमें रेशम के कीड़े से मिलता है। इसके कपड़े तो बहुत कोमल, सुनहरे, आरामदायक और लुभावने होते हैं। लेकिन इसे प्राप्त करने की प्रक्रिया बड़ी क्रूर है।''

''कैसी क्रूरता माँ?'' अपूर्वा ने पूछा।

''रेशम उत्पादन केन्द्रों में नर और मादा रेशम के कीड़ों को पाला जाता है। इन कीड़ों से प्राप्त अण्डों से जो लार्वा निकलता है, उन्हें अधिकतर शहतूत के पत्तों पर पाला जाता है। रात-दिन पत्तों को खाकर ये पोषण प्राप्त करते हैं और बढ़ते जाते हैं। ये इल्लियाँ पतंगा बनने से पहले अपने विकास के लिए अपने मुँह से लार निकालती हैं। यह लार हवा में सूखकर रेशम का धागा बन जाती है और इस धागे के आवरण में ये इल्लियाँ स्वयं को लपेट लेती हैं। यह कवच कोकून कहलाता है

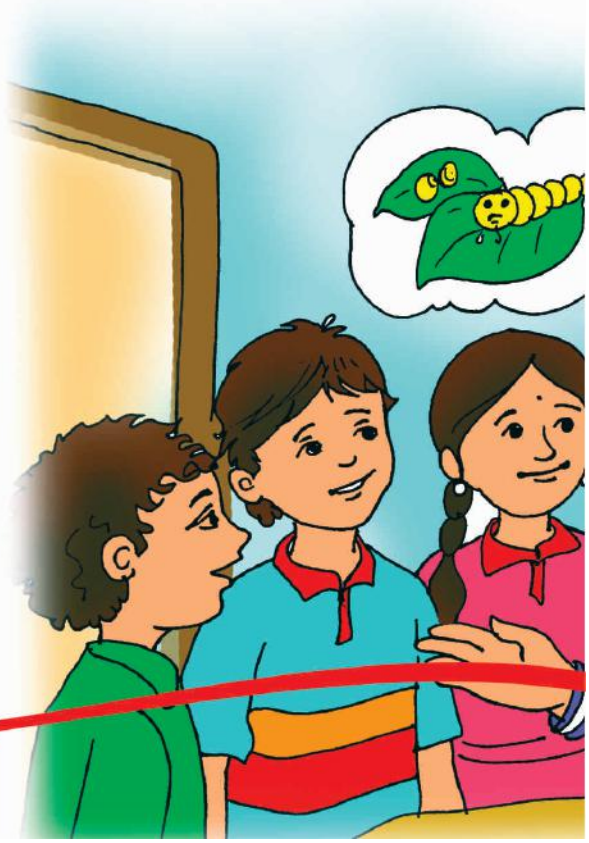

और कीड़े की यह अवस्था प्यूपा। यह कवच उनकी अन्य जीव–जंतुओं द्वारा भक्षण से रक्षा करता है। लेकिन मानव की रेशम प्राप्त करने की इच्छा उनके लिए इसी सुरक्षा कवच को हत्या के कवच में बदल देती है।'' रश्मि मौसी ने जवाब दिया।

''अरे, पर कैसे?'' अंकिता ने दुख मिश्रित विस्मय से पूछा।

''दरअसल एक सामान्य प्रक्रिया में तो विकसित हो जाने के बाद पतंगा इस कोकून को काटकर बाहर निकल जाता है। लेकिन उसके बाहर निकलने के बाद कवच का रेशम उपयोगी नहीं रहता। इसलिए उसके निकलने के अंतिम चरण में ही इन कोकून को गर्म–गर्म पानी में कुछ घंटों के लिए डाल दिया जाता है। नन्हा कैटरपिलर इतनी गर्मी सहन नहीं कर पाता और तड़फकर मर जाता है। इसके बाद इन कोकूनों से रेशम का धागा निकाला जाता है। कहते हैं कि एक ग्राम रेशम के लिए ऐसे लगभग १५ कोकून की आवश्यकता होती है। रेशम की एक साड़ी के लिए ऐसे पचास हजार कीड़ों की हत्या की जाती है।'' रश्मि मौसी ने विस्तार से बताया

सभी बच्चे एकदम ध्यान से रश्मि मौसी की बात सुन रहे थे। सबके चेहरे पर थोड़ी उदासी सी छा गई थी।

रश्मि मौसी ने आगे बताते हुए कहा, ''कुछ अन्य उत्पादकों और सुविधा के लिए रेशम के कीड़ों के साथ होने वाली और भी यातनाएँ इस प्रक्रिया में सम्मिलित हैं। रेशम हालाँकि एक प्राकृतिक रेशा है। पर एक सामान्य जीवन चक्र में रेशम के ये कीड़े पौधों के परागण में काम आते हैं। ये अन्य जीवों का भोजन भी हैं और खुद भी कुछ कीटों और फफूंदी को खत्म कर प्राकृतिक संतुलन में भूमिका निभाते हैं।''

''अब मैं कभी रेशम का कोई कपड़ा नहीं खरीदूँगा।'' अस्तित्व ने उदास चेहरे के साथ कहा।

''माँ के पास रेशम की कई साड़ियाँ हैं। मैं उन्हें भी इस बारे में बताऊँगी।'' अंकिता भी उदास होकर बोली।

''बेटा,उदास नहीं होते। रेशम बनाने के और भी कई तरीके हैं। कुछ जगह रेशम के कीड़ों को अरण्डी के पौधों पर पाला जाता है। वहाँ उन्हें मारा नहीं जाता। पतंगे के बाहर निकलने के बाद ही रेशम निकाला जाता है। इसे एरी रेशम कहते हैं। कुछ पौधे भी हैं जिनसे हम सिल्क कॉटन प्राप्त करते हैं। ये विकल्प भी अपनाये जा सकते हैं।'' रश्मि मौसी ने कहा।

''जी मौसी आपने एकदम सही कहा। दादा भी यह कहते हैं कि हम सभी प्राणी अपने भोजन व अन्य आवश्यकताओं के लिए एक दूसरे पर निर्भर हैं। ऐसे में हमें सभी प्राणियों के साथ संतुलन में चलना चाहिए।'' अस्तित्व ने कहा।

''हाँ अस्तित्व, तुम्हारे दादा एकदम सही कहते हैं।'' रश्मि मौसी ने अस्तित्व का सर सहलाते हुए कहा।

बच्चों का मन अच्छा करने के लिए रश्मि मौसी सबके लिए शरबत और नाश्ता लेकर आई और बोली, ''संवेदना का पाठ पढ़ना आनंद का अवसर होता है दुःख का नहीं। चलो आओ सब, नाश्ता करते हैं।''

बच्चे नाश्ता कर फिर से अपने गृहकार्य में लग जाते हैं और तय करते हैं कि अबसे सप्ताह के एक दिन वे प्रकृति से जुड़ी ऐसी ही नई बातों और जानकारियों पर चर्चा करेंगे ताकि प्रकृति और पर्यावरण के पक्ष में उनकी जागरुकता बनी रहे।

● **भीलवाड़ा (राज.)**

॥ स्तम्भ ॥ स्वयं बनें वैज्ञानिक :

चिल्लाने वाले चम्मच

आलेख
डॉ. राजीव तांबे

अनुवाद
सुरेश कुलकर्णी

आज हम आपको बताने जा रहें हैं कि चम्मच भी चिल्लाते हैं। क्या आपने उनका चिल्लाना कभी सुना है? नहीं, तो चलिए हम बताते हैं। चलो इसके लिए सामग्री क्या लगेगी यह लिख लीजिए।

विभिन्न आकार के छोटे बड़े चम्मच

काँटे वाले चम्मच

बीस इंच लम्बा मोटा धागा

एक पलटा, एक कैंची और एक झारा

चलो करते हैं अपना नया प्रयोग चिल्लपों करने वाले चम्मच का –

एक चम्मच को मोटे धागे से एक सीरे से बांध दीजिए। उसका दूसरा सिरा एक लड़के के कान के पास लम्बवत रखें, अब उस चम्मच पर दूसरे चम्मच से धीरे आघात करें। आवाज की गूंज अर्थात चम्मच का देर तक सुनाई देगा। इसे ध्यानपूर्वक सुनना। फिर अलग अलग चम्मच बांधकर उसे सुनकर उसके आवाज को ध्यान में रखें। हर चम्मच की आवाज अलग अलग आयेगी। फिर आप आँखे बंद करें और यह पहचानें कि कौनसा चम्मच उस सिरे पर बांधा गया है। अभ्यास के पश्चात आप हर चम्मच, पलटा, झारा या कड़छी की आवाज पहचान जाएंगे।

यह ऐसा क्यों होता है? इसका कारण है।

जब हम धागे पर बंधे हुए चम्मच पर आघात करते हैं तो वह चम्मच कम्पन करता है और उस कारण ध्वनि तरंग उठती हैं और वे तरंग वायु मंडल का आधार लेकर हमारे कान में पहुँचती है और उस तरंग का बार बार आघात होने से रूपांतर बड़े आकार में होता है और हमें जोर से वह सुनाई देता है।

आप यह कीजिए कि, जो धागा हमने लिया है उस पर गाँठ लगाईये और फिर चम्मच का कंपन सुनें। क्या होता है यह हमें हमेशा की तरह लिखकर भेजना नहीं भूलें। तो हमें आपके पत्र की प्रतीक्षा रहेगी।

● पुणे (महा.)

पहेलियाँ

आलेख
अरविन्द कुमार साहू

॥१॥

लप लप लप लप जीभ जले
मुँह से धुआं बहुत निकले।
लकड़ी कोयला सब खाये,
छू लेने पर हाथ जले॥

॥२॥

अंधकार उसको धमकाता
तेज पवन थप्पड़ दे जाता।
पर वह दृढ़ निश्चय से जलता,
दुनिया को रोशन कर जाता॥

यह देश है वीर जवानों का (५)

सेकंड लेफ्टीनेंट
राम राघोबा राणे

१८ मार्च १९४८, भारत की ५० पैरा ब्रिगेड तथा १९ इंफैंट्री ब्रिगेड नौशेरा को पुनः अधिकार में लिए झाँगर को भी प्राप्त कर चुकी तो शत्रु पर दबाव बनाए रखने के लिए राजौरी पर भी अधिकार करने की सैन्य नीति पर कार्य हुआ। लेकिन लक्ष्य कठिन था। भारी तोड़फोड़ और बाधाओं का जाल बिछाए शत्रु ने इस लक्ष्य को पाने का मार्ग अत्यंत कठिन एवं संकटमय बना दिया था। बारवाली रिज, चिंगास और राजौरी पर तीन चरणों में अधिकार करने की योजना बनाई गई थी। ८ अप्रैल के पहले ही दिन 'रिज' को पाने में सफलता मिली। दुश्मन को मुँहतोड़ उत्तर देते हुए हमारी सेनाएं सड़क के दोनों ओर पहाड़ी मार्ग के किनारे-किनारे चौकन्नी होकर बढ़ती जा रही थी। १० अप्रैल चिंगास पर हम अधिकार कर सके। शत्रु ने सारे मार्ग पर बारूदी सुरंगों का मकड़जाल फैला रखा था। बख्तरबन्द दस्तों के मार्ग में यह घातक बाधाएं दूर कर रहे थे युवा इंजीनियर अधिकारी लेफ्टीनेंट राणे। इस मृत्यु से साक्षात्कार करने जैसे खतरनाक कार्य में उनके दो साथी मातृभूमि पर प्राण न्यौछावर कह चुके थे पर अपने प्राण हथेली पर लिए ले. राणे मौत की छाती खोदते दुश्मन की हर बारूदी चाल को असफल बनाते भारतीय टैंकों के मार्ग को निर्बाध बनाते जा रहे थे। अन्ततः चिंगास हमारा हुआ।

भारतीय सेना का यह बहादुर लड़ाका भारत माता का साहसी लाल ले. राणे परमवीर चक्र से सम्मानित हुआ।

॥३॥
लौहे के पिंजरे में रहती
शीश महल से देखा करती।
तैल कैरोसीन का पी कर,
सबको सदा उजाला देती॥

॥४॥
एक पहाड़ी बहुत बड़ी,
वहाँ कड़ाही गरम चढी।
पूड़ी पक कर लाल खड़ी,
साँझ हुई तो फिसल पड़ी॥

॥५॥
एक गेंद आकाश चढ़ी,
चमक चाँदनी किरण जड़ी।
जगमग सारा जगत हुआ,
रात ढली तो लौट पड़ी॥

● ऊँचाहार (उ.प्र.)

पुस्तक परिचय

सुकीर्ति भटनागर बाल साहित्य जगत की एक ऐसी सुविख्यात रचनाकार हैं जिनकी लेखनी बाल एवं किशोर बच्चों के लिए बाल साहित्य की विविध विधाओं में अनवरत सृजन करती रहती है। सरलता, सुबोधता एवं उद्देश्यपूर्णता आपकी रचनाओं में सहज गुण हैं।

उड़ान पब्लिकेशंस मानसा द्वारा प्रकाशित दो बाल काव्य संग्रह

बचपन रंगरंगीला

२७ मनभावन रंगभरे रसभरे गीत

मूल्य ८०/-

मधुर मधुर हँसते रहना

२८ खिलखिलाते गुनगुनाते गुदगुदाते गीत

मूल्य ८०/-

इसी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित दो बाल उपन्यास

छूना है आसमान

बालको में नई स्फूर्ति, सकारात्मकता, उत्साह और लगन जगाने वाला बाल उपन्यास

मूल्य १००/-

हाथ की सफाई

रोचक एवं पारिवारिक कथानक के माध्यम से चोरी का रहस्य उजागर करता बाल उपन्यास

मूल्य २०/-

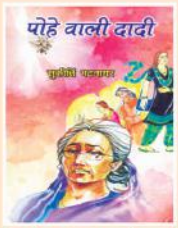

मूल्य १६०/-

पोहे वाली दादी

सुकीर्ति भटनागर द्वारा रचित जीवन में सकारात्मक सोच विकसित करने वाली ६रोचक एवं मार्गदर्शक कहानियाँ।

प्रकाशक – साहित्यागार प्रकाशन, धामाणी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर ०३

मूल्य २००/-

एकलव्य

कठिन एवं विपरीत परिस्थिति में भी अपने साहस, दृढ़ इच्छाशक्ति और लगन के कारण अपने लक्ष्य को पाने वाले बच्चे के प्रेरणास्पद, बोधप्रद एवं जुझारू जीवन की रोमांचक कथानक पर बुना किशोर उपन्यास।

प्रकाशक – संगम पब्लिकेशन्स, शेखों कालोनी, बस स्टैण्ड के पास, समाना (पटियाला) पंजाब

मूल्य ५०/-

प्रेरक बाल कहानियाँ

विख्यात बाल साहित्यकार डॉ. दिनेश पाठक 'शशि' द्वारा रचित ४ रोचक बाल कहानियाँ जिसमें मनोरंजन के साथ ही है आपके लिए प्रेरणाएँ भी।

प्रकाशक – आयुष बुक्स डी–३–ए विश्वविद्यालय पुरी, गोपालपुरा बायपास, जयपुर ३०२०१८

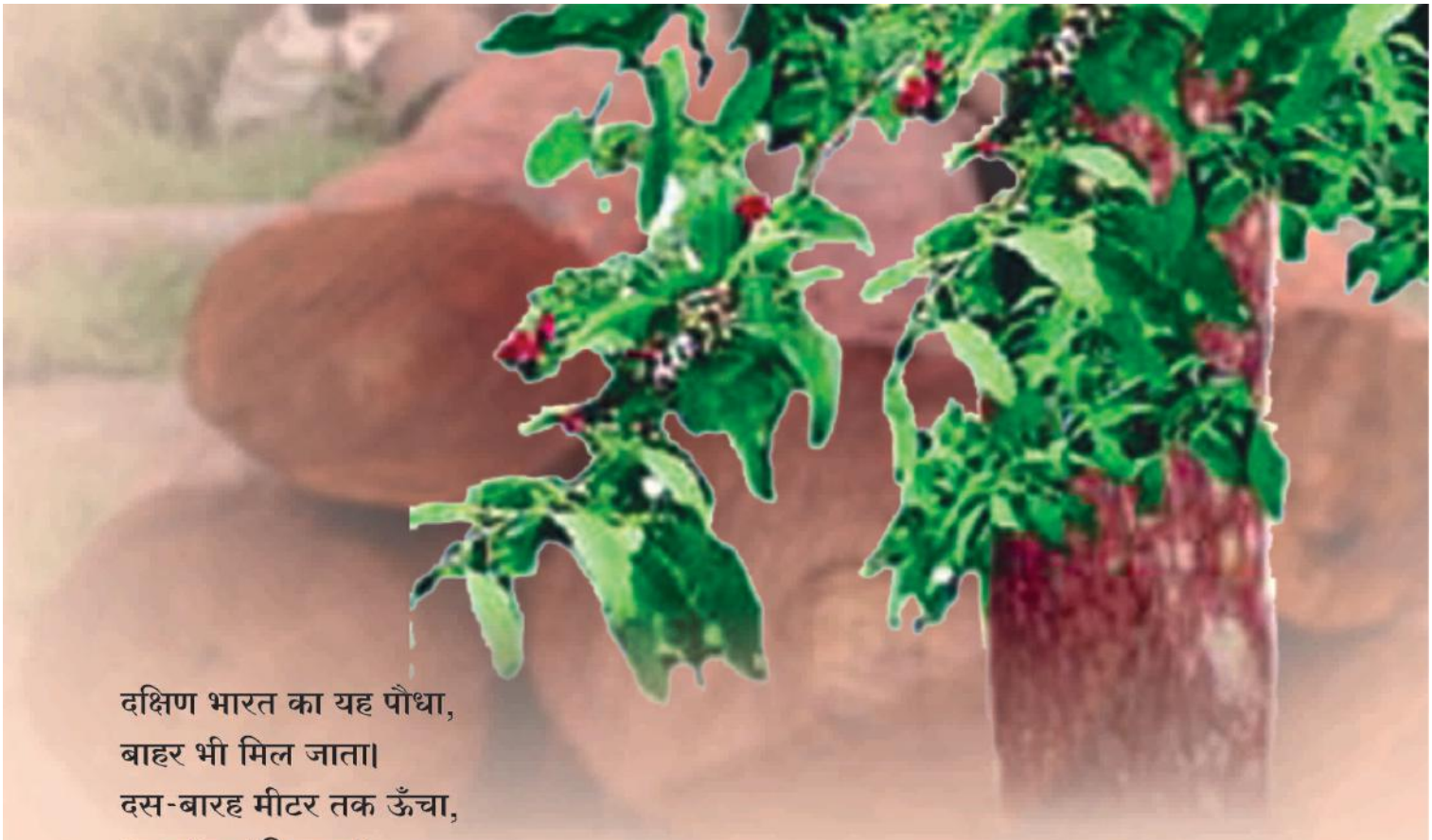

॥ हमारे राज्य वृक्ष ॥

चंदन

• डॉ. परशुराम शुक्ल

कर्नाटक का राज्य वृक्ष

दक्षिण भारत का यह पौधा,
बाहर भी मिल जाता।
दस-बारह मीटर तक ऊँचा,
अपना रूप दिखाता।
उगता अपने आप कहीं यह,
कहीं उगाया जाता।
सौ वर्षों से अधिक आयु का,
लम्बा जीवन पाता।
वृक्ष निराला परजीवी यह,
जड़ से सेंध लगाता।
आसपास वाले वृक्षों का,
भोजन चट कर जाता।
बीज और लकड़ी जड़ सबसे,
मोहक तेल बनाता।
क्रीम पावडर सेन्ट कीमती,
काम सभी में आता।
औषधीय उपयोगी भी यह,
ऐसी दवा बनाता।
चर्मरोग से हृदय रोग तक,
पल में दूर भगाता।

• भोपाल (म.प्र.)

धैर्य

चित्रकथा-

गांव के मंगलू की शहर में सरकारी नौकरी लगी तो एक बुजुर्ग ने सलाह दी-

अब तुम सरकारी पद पर काम करोगे मंगलू, हर मौके पर धैर्य से काम लेना.

हां दादा, याद रखूंगा.

बिल्कुल याद रखना..अब तुम्हें सरकारी पद पर काम करना है हर मौके पर धैर्य से काम लेना.

हां जरूर..

जरूरी है भी क्योंकि अब तुम सरकारी पद पर काम करोगे तो धैर्य से काम लेना.

मैं मूर्ख नहीं हूं दादा.

..धैर्य के बारे में बार-बार क्यों समझा रहे हो?

धैर्य रखना आसान बात नहीं प्यारे, मैंने केवल तीन बार अपनी बात दोहराई और तुम धैर्य खो बैठे.

छः अंगुल मुस्कान

● विष्णु प्रसाद चौहान

शिक्षक (संटू से) : तुम तो पढ़ाई में बहुत कमजोर हो। मैं तुम्हारी उम्र में गणित के इससे भी कठिन सवाल हर कर लेता था।

संटू : आपको अच्छे शिक्षक मिल गए होंगे सर, सबकी किस्मत इतनी अच्छी नहीं होती।

*****

एक पुलिस वाले के घर चोरी हो रही थी।

उसकी बीवी : उठो जी, घर में चोरी हो रही है।

पुलिस वाला नींद में : मुझे सोने दो यह मेरी ड्यूटी का समय नहीं है।

*****

सोनू मंदिर के बाहर टहल रहा था।

भिखारी : बेटा, तेरी जोड़ी सलामत रहे।

सोनू : मैं तो सिंगल हूँ।

भिखारी : मैं जूतों की जोड़ी की बात कर रहा हूँ बेटा।

*****

चेतन : अरे कहाँ जा रहे हो तुम?

सोहन : दिखता नहीं क्या, नहाने जा रहा हूँ।

चेतन : अरे! पर मोबाइल लेकर?

सोहन : फिर बाल्टी भरने तक क्या करूंगा?

*****

पुलिस : तुमने अपने पड़ोसी के बेटे धीरज का अपहरण क्यों किया?

व्यक्ति : धंधा गड़बड़ चल रहा था, तो एक बाबा को हाथ दिखाया, वो बोले कुछ दिन धीरज रखो सब ठीक हो जाएगा।

*****

सोनू : आदमी गन से डरते है, तो सब्जियाँ किससे?

मोनू : वो बैगन से डरती है।

*****

पत्नी : देखो जी, कल मेरी माँ आ रही है।

पति : माँ के साथ पिताजी भी आ रहे है?

पत्नी : क्यों ? पिताजी क्यों आयेंगे?

पति : पिताजी भी आते तो मेरी रसोई में मदद हो जाती।

● ढबला हर्दू (म.प्र.)

सही उत्तरः पहेलियाँ – (१) आग (२) दीपक (३) लालटेन (४) डूबा सूरज (५) चंद्रमा

॥ श्रद्धांजलि ॥

आजाद हिन्द फौज की वीरांगना नहीं रहीं

1996 में देवपुत्र : बालसाहित्यकार सम्मेलन में शकुंतला सिरोठिया, राहबन्धु (प्रथम पंक्ति), श्रद्धेया **मानवती आर्या**, कृष्ण शलभ, श्रीमती विजय, रामनारायण त्रिपाठी, नागेश पांडेय 'संजय' आदि

कानपुर। प्रख्यात बाल साहित्यकार श्रीमती मानवती आर्या का १०० वर्ष की अवस्था में दुःखद निधन हो गया। मानवती जी क्रांति धर्मा सुभाषचंद्र बोस द्वारा गठित आजाद हिन्द फौज की महिला इकाई ''रानी झाँसी रेजीमेन्ट'' की सिपाही रही।

राष्ट्रीय चेतना को स्वतंत्रता पश्चात् लेखन में परिवर्तन कर उन्होंने बाल साहित्य के क्षेत्र में भरपूर योगदान दिया। जीवन के अंतिम क्षण तक वे बाल साहित्य लेखन पठन को प्रोत्साहन देती रहीं।

देवपुत्र द्वारा आयोजित प्रथम बाल साहित्यकार सम्मेलन १९९६ में उनका आशीर्वाद प्राप्त हुआ था। अपने परिवार की इस वरिष्ठ रचनाकार को देवपुत्र परिवार की विनम्र श्रद्धांजलि।

सूरज दादा

कविता

पं. नन्दकिशोर निर्झर

सूरज दादा अगर न आते।
तो धरती पर होती रातें।।
सागर का पानी जम जाता।
नदियों का बहाव थम जाता।
नहीं गरजते बादल गड़गड़।
ऋतु बसन्त आता न पतझड़।
बोलो! हम क्या पीते-खाते?
सूरज दादा अगर न आते।।
फूलों का संसार न होता।
कोयल, मोर न दीखता तोता।
फिर क्या मूर्गा बांग लगाता?
कौन सुबह का गीत सुनाता?
पंडित! किसको अर्ध्य चढ़ाते?
सूरज दादा अगर न आते।।
रहता चारों ओर अन्धेरा।
चिमगादड़, उल्लूओं का डेरा।
नभ से ठंडी बर्फ बरसती।
दुनियाँ पाने धूप तरसती।
तेज शीत से तन थर्राते।
सूरज दादा अगर न आते।।

● चित्तौड़गढ़ (राज.)

Anand Super 100

Our Vision Your Success

FOR CIVIL SERVICES

12वीं के बाद कॉलेज के साथ बनें प्रशासनिक अधिकारी

IAS/IPS MPPSC MPSI

FOUNDATION BATCHES 1 year 2 year 3 year

विशेषताएँ

- इंदौर में पहली बार सिविल सेवा में चयनित विशेषज्ञों एवं अनुभवी मार्गदर्शकों की टीम से पढ़ें।
- उच्च गुणवत्ता की अध्ययन सामग्री।
- प्रतिदिन टेस्ट व सप्ताहिक टेस्ट।
- प्रोजेक्टर एवं पॉवर पाइंट के माध्यम से पढ़ाई।
- तथ्यों को याद करवाने हेतु विशेष तकनीक का प्रयोग।
- वातानुकूलित कक्षाएं व बैठने की उत्तम व्यवस्था।
- विषय संबंधी समस्याओं के निराकरण के लिए व्यक्तिगत इंटरेक्शन।
- वातानुकूलित पुस्तकालय एवं लाइब्रेरी की सुविधा।
- छात्राओं के लिए विशेष बैठक व्यवस्था।
- ऑनलाइन व ऑफलाइन प्रीलिम्स टेस्ट सीरीज की नि:शुल्क सुविधा।
- कक्षाओं में डीजिटल बोर्ड का इस्तेमाल इमेज ऑडियो, विडियो आदि की मदद से कठिन विषयों को आसान बनाने की शैली।
- इंदौर में बेस्ट प्रीमाइसिस में अध्ययन का लाभ लें।

आनंद भवन, 7 इन्द्रपुरी, भंवरकुँआ, इंदौर **Mob.: 0731-4978828, 9300797777, 9752138484**

Anandsuper100.com

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०१८-२०२०
आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०१/२०२०
प्रेषण तिथि ३०/०१/२०२०
प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

प्रविष्टियां सादर आमंत्रित

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०१९

डॉ. परशुराम शुक्ल द्वारा स्थापित इस पुरस्कार हेतु वर्ष २०१९ के लिए सभी बाल साहित्यकारों से उनकी प्रविष्टियाँ सादर आमंत्रित हैं।

- इस वर्ष यह पुरस्कार **बाल लोककथा** के लिए निश्चित किया गया है।
- आप अपनी इस विधा की कोई एक रचना **३१ मार्च २०२०** तक अवश्य भेज दें।
- रचना हिन्दी में हो।
- रचनाओं के प्रकाशन का अधिकार 'देवपुत्र' का होगा। जिसे देवपुत्र किसी प्रकाशन संस्थान के सहयोग से भी प्रकाशन की योजना कर सकता है।
- सर्वश्रेष्ठ ५ रचनाओं को क्रमशः **१५००/-,१२००/-, १०००/- एवं ५००-५०० रूपए के दो प्रोत्साहन पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र** दिए जाएंगे।
- निर्णायकों का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा।

प्रविष्टि भेजने का पता - **डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०१९**
देवपुत्र बाल मासिक, ४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

प्रविष्टियां आमंत्रित

मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१९

डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ द्वारा स्थापित मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१९ के लिए **यात्रा वृत्तान्त** की पुस्तक हेतु प्रदान किया जाना निश्चित हुआ है। इसकी **पुरस्कार निधि ५०००/- पाँच हजार** रुपए है।

इस हेतु आपकी प्रकाशित कृति (पुस्तक) की तीन प्रतियाँ **३१ मार्च २०२०** तक निम्नांकित पते पर सादर आमंत्रित हैं।

प्रविष्टि भेजने का पता - **माया श्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१९**
देवपुत्र बाल मासिक, ४० संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

प्रविष्टियां आमंत्रित

भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०१९

प्रिय बच्चो!

प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी देवपुत्र के पूर्व व्यवस्थापक **श्री शान्ताराम जी भवालकर की स्मृति** में आयोजित इस प्रतियोगिता में आप बच्चों द्वारा लिखी गई मौलिक एवं स्वरचित कहानियाँ आमंत्रित हैं। आपकी कहानियाँ हमें **३१ मार्च २०२०** तक अवश्य मिल जाना चाहिए। **प्रतियोगिता के पुरस्कार हैं -**

प्रथम ११००/-, द्वितीय ११००/-, तृतीय १०००/- एवं ५५०/- रुपए के दो प्रोत्साहन पुरस्कार

अपनी कहानी के साथ अपना नाम, कक्षा, विद्यालय का नाम, घर का पूरा पता (पिनकोड सहित) अपना दूरभाष/मोबाइल नं. एवं अपना या अभिभावक का बैंक खाता क्रं. आई एफ एस कोड़, खातेदार का नाम बैंक, शाखा का नाम भी अवश्य लिख भेजें जिससे पुरस्कार राशि सीधे उस खाते में जमा की जा सके। प्रविष्टि भेजने का पता - **भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०१९**
देवपुत्र बाल मासिक, ४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना